



શ્રી કેળ મહાવિજાન પુષ્પાળિ

ACHARYA-SRI KAILASSAGAREURI GYANMANDIR
SHREE MAHAVIR JAIN ARADHANA KEMORA
Kobad, Juninagar - 382 007.
Ph. : (079) 232/6252, 23276204-05
(079) 23276249



વર્ષ: ૨૧૦૫
ક્રમાંક: ૨૫૨

વિજાપુ

પર્વાધિરાજ પર્યુષણુ મહાપર્વ નળક આવી રહ્યા છે. આ પ્રસંગે મુનિ-સમુદ્ભેદનના સંભારણાદ્ય શ્રી જૈન ધર્મ સત્ય પ્રકાશક સમિતિ અને આ માસિકને ઉદ્ઘાર હાથે સહાયતા કરવાની અમે બધાં શેડેરો તથા ગામોના જૈન સંઘને વિનંતી કરીએ છીએ; અને આ માટે શ્રી સંઘને પ્રેરણા અને ઉપરોક્ત આપવાની મૂલ્ય આચાર્ય મહારાજ આદિ સર્વ શ્રમણ સમુદ્ભાયને સવિનય વિસ્પિત કરીએ છીએ.

સમિતિ પાસે ડેર્છ સ્થાયી બાંડોળ નથી; પણ દર વર્ષે શ્રીસંઘ તરફથી મળતી જરૂર પૂરતી સહાય ઉપર જ અનુસ્ત કાર્ય નલે છે. એટલે શ્રીસંઘ તરફથી જેટલા પ્રમાણુમાં વિશેષ સહાયતા મળશે તેટલે અંશે સમિતિ વિશેષ કાર્ય કરી શકશે.

ચતુર્વિંધ જૈન સંઘ પોતાની આ સંસ્થા અને પોતાના આ માસિકને અવસ્થય યાદ રાપે અને વધુમાં વધુ સહાયતા મોકલી અને પગભર કરે, એ જ અનુયર્થના।

—તંત્રી

વિષય-દર્શન

અંક :	લેખ :	લેખક :	પૃષ્ઠ :
	વિરાસિ		દાયટલ પાતું-૨
૧.	ક્ષમાપનાનું મહાપર્વ શ્રી પર્યુષણપર્વ	પૂ. સુ. શ્રી. ઇન્ડિવિજયજી મ.	૨૧૭
૨.	‘શ્રી. જૈન સત્ય પ્રકાશ’ને ચાલુ રાખવા માટે શું કરવું જોઈએ? શ્રી. જૈન		૨૧૮
૩.	અષ્ટાપદ તીર્થ-ઈતિહાસ	પૂ. સુ. શ્રી. ગાનવિજયજી મ. (નિપુણ)	૨૨૧
૪.	દક્ષિણા જૈનો અને જૈનધર્મ	શ્રી. મોહનલાલ દીપચંદ ચોકસી	૨૨૪
૫.	તેરાપંથ-સમીક્ષા	પૂ. પં. શ્રી. હુરખરવિજયજી ગણી	૨૨૭
૬.	ઉદ્ઘારાનાં મંહિરી	પૂ. સુ. શ્રી. દર્શનવિજયજી મ. (નિપુણ)	૨૨૮
૭.	દિક્ષપટ યોરસી મોદ પ્રત્યુત્તિ: (૮૪ મોદવિચાર) રેખાદર્શન	ગ્રે. દીરાલાલ ર. કાપડિયા મેમ. એ.	૨૩૩



॥ ॐ अहम् ॥

अखिल मारतवर्षीय जैन श्वेताम्बर मूर्तिपूजक

मुनिसम्मेलन संस्थापित

श्री जैनधर्म सत्यग्रहकाशक समितिनुं मासिक मुख्यभ्र

जेशिंगभाईनी वाडी : धीकांटा रोड : अमदावाद (गुजरात)

तंत्री : श्रीभनसाल गोकुण्ठास शाह

वर्ष : २१

विक्रम सं. २०१२ : वीर नि. सं. २४८१ : ई. स. १५५८

क्रमांक

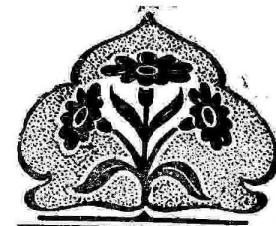
अंक : ११

आवण सुह ६ भुवनार : १५ ओगस्ट

२५१

क्षमापनानुं भद्रापर्व श्री पर्यूषणा पर्व

वेष्टक : पृ. मुनिशरज श्री, इच्छविजयल



अमृतमाना कल्याणे भाटे नलकना सभयमां क्षमापनानुं भद्रापर्व श्री पर्यूषणा पर्व आवारी रहेले छे. आ महापर्वने अनेकविध योजनायो दारा उज्ज्वलानी योजना भद्रापनीयो करी छे. एमां क्षमापना नामना कर्तव्यने पण भद्रत्वनुं स्थान भयेल छे.

क्षमापनाना कर्तव्यना आयरण्यमां क्षयायोथी उपशमवानुं अनिवार्य अने छे. विषये ज्यारे भन-झुँझ उपर पेतानी कातील पकड जमावे छे, त्यारे क्षयायो पवनवेगे जिल्हा पडे छे अने जिल्हा पडेला क्षयायो ज्ञवनमां अनेक प्रकारना कडवा-क्षयायला रंगनी उपरिथित करी हे छे. आवा सभये आत्मानी हालत अहु दुःख भरी होय छे, के आत्माने पेताने पण गमती होती नथी, तो भीजने तो डेवी रीते पसंद पडे ?

ज्ञैन शासनमां क्षयायोथी उपशमवानी प्रक्रियानो अभल हमेशा करवानो होय छे, करणे के आत्मा सूक्ष्म रीते पण हमेशा क्षयायोथी लर्यो लर्यो ज रहे छे. डेवण हैङ्किं ज्ञवन ज एवुं होय छे के यो ज्ञवनमां क्षयायो अने विषयोनुं सामान्य ज प्रवर्ती रहेलुं होय छे. ज्यारे आभ होय त्यारे क्षय विनानो आत्मा क्यारे होय के क्येथी तेने उपशमवानी जडू न पडे. आथी क्षयायोथी उपशमवानी प्रक्रियानो अभल हमेशा करवानो होय छे. आभ छां क्षयायो अने विषयोना एकछांती सामान्यमाथी आत्मज्ञातिनो जेमने हमेशा अवकाश न भज्यो. होय तेयो पंदर हिवसे पण आत्मज्ञाति भेणी शक्ते तो पंदर हिवसे पण क्षयायोथी उपशमवानी प्रक्रियानो अभल करी शक्ता छे. जेयो पंदर पंदर हिवसे पण आत्मज्ञाति भेणी शक्ता न होय अने शेथी पंदर पंदर हिवसे पण क्षयायोथी उपशमवानुं अनी शक्तुं न होय तेयो जे चार भद्रिने पण आत्मज्ञाति भेणी शक्ता होय तो तेयो चार चार भद्रिने पण क्षयायोथी उपशमवानी प्रक्रियानो अभल करी शक्ते छे. आ ज रीते जेयो

२१८]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष २१

यार चार भहिने पणु आत्मजनगति भेणी शक्ता न होय अने तेथी चार चार भहिने पणु कृषयोथी उपशमवानी प्रक्षियानो अमल अनी शक्तो न होय तेग्येअे छेवटे शास्त्रभर्याहाना वर्ष द्विसने अने तो सधाराय प्रकारना कृषयोथी उपशमवानी प्रक्षियानो अमल करतो ज नेईचे, नेव्यो छेवट आ रीते पणु कृषयोथी उपशमवानी प्रक्षियानो अमल करता ज नथी तेग्योनी भानवता का तो भरी नय छे अगर ज्ञावार्ध नय छे.

विषयोना विरागना असावना कारणे अने विषया तरडना सहभावना कारणे आपणा अ॒ष्टनभां कृषयो डैक्टेलो अने डेवेक लाग लज्जे छे, तेनो सूक्ष्म रीते अभ्यास करवा जेवो छे. कृषयो जिला थाय छे अने तोझने यढे छे ते अभ्यास थता नथी. एमने पणु जिला थवाभां अने तोझने यढवाभां पूरता कारणे भगे छे, ए कारणे कृथारेक पौते पणु घोणा ले छे तो कृथारेक खुद आपणे ज तेमने पूरा पाडीचे छीचे. कॉर्झ पणु रीते पणु कारणे नी हाजरी भगे अने ए जिला थाय तथा तोझने यढे एमां नवार्ध नेवुं कॉर्झ नथी. ए एवा तो उडार नीतिवाणा नथी डे एमने जिला थवा अने तोझने यढवा पूरता कारणे भगे अने ए जिला थवातुं अने तोझने यढवानुं भाडी वाणे. एटले कृषयो जिला थाय अने तोझने यढे अने ने कॉर्झ आनाखराई भरनय तेमां एमने ज ज्वापदार गणुवा करता, एमने जिला थवाभां अने तोझने यढवाभां ने कारणे. छे ए कारणे. एमने पूरा पाडनारने ज ज्वापदार गणुवा नेईचे, ए अने तो व्याख्या लागे छे.

आपेय कृषयो पुढगल स्वृप्त अने जड तो छे ज. आथी ए पोतानी जेणे स्वतंत्र तो प्रथत्न करी शङ्कवाना ज नथी. तेओ आपणुने वण्गे तेवां कारणे आपणे तेमने आपाचे अने तेओ आपणुने वण्गी आत्मानी परिणित पोतानाभ्य अनावे तेमां एमनो गुनहो शो ? ने जेवा गुणवाणा होय तेवा शुणु खतावे तेथी ए कॉर्झ गुनेगार करतो नथी. कृषयो जेवा सहभावना होय, तेवुं ज, तेने अनुसरतुं ज इल तेओ आपे. आपणुने कृषयोतुं इल पसंद न होय तो तेओनो आपणुभां प्रवेश थवा हेवा न नेईचे अने तेओ जे कारणे ना आधारे प्रवेश करे, तेवा कारणे. आपणे तेमने पूरा पाडवा नेईचे नहि.

आपणी तो हालत ए छे डे कृषयोने नेईता कारणे नो. अलनो आपणे लां लर्ही पडचो छे, आली कर्ही थाय एवो नथी. आ संज्ञेगोभां कृषयोने कारणे सहेजे मणा नय अने रोज रोज ए जिला थाय अने तोझने यढे अने आनाखराई भरनय एमां नवार्ध नेवुं शुं छे ?

आपणे तो आपणुभां कृषयो जिला थाय अने तोझने यढे एवुं क्रेम करीचे छीचे तेम भीजओभां पणु कृषयो जिला थाय अने तोझने यढे, एवुं य करीचे छीचे. आत्माभां आपणुने जाणे कॉर्झ बाडी रही जतुं तेम भीजओभां कृषयोभी भरी वृत्तिओ अने ग्रवुत्योने प्रशंसाना शब्दपुण्योनी कूलगुंथयालरी भाणाओ आरोपणु करवाभां आपणुने धनभाजी भनवीचे छीचे.

लाज्यवानो ! महापर्वना भहान हिवसो नज्ञकमा ज आवी रद्धा छे. ए हिवसो आवे ए पहेला ज विषयोनो सहभाव दूर करी विराग डेववा भाँडनो. विषयोनो सहभाव दूर थई अने विराग डेववार्ध जशे तो कृषयोथी उपशमवातुं सुलब अनी जशे. सौ कॉर्झ लज्यात्माओ शास्त्रभर्याहाना वर्ष द्विसने अने पणु कृषयोथी उपशमवातुं करे अने ए रीते क्षमापनाना कर्तव्यने अ॒ष्टनभां आयरवातुं अनावे अने आ कर्तव्यना आयरण्यातुं भहान इल जे भोक्त, तेने तेओ पामे ए ज शुभाजिलापा.

‘श्री जैन सत्य प्रकाश’ ने चालु राखवा माटे शुं करवुं जोઈये ?

(श्री ‘जैन’ हर्षविदा विचारो)

सुंभृथी प्रगट थता ‘मुंभृथ समाचार’ हैनिकनी ‘जैन चर्चा’ना लेखक श्री ‘जैन’ ता. ५-७-५६ना सुंभृथी समाचारनी ‘जैन चर्चा’मां ‘श्री जैन सत्य प्रकाश’ ने पगलर करवा माटे शुं करवुं जोईये ? ए अगे ऐताना विचारो प्रगट कुर्यां छे. अमा अमाणु भमितिनो २१ वर्षनो हिसाप प्रगट करवानी सूचना करी छे. आ संभृथमां अमो अटहुं ज्ञाववानी रज्ज लाईये छीये के वि. सं. २००५ सुधीना हिसापो विगतवार ‘श्री जैन सत्य प्रकाश’मां आ प्रभाणु प्रगट करवामां आयेल छे: कमांड ६८-६६मां वि. सं. १६६६ना श्रावणु भास्थी वि. सं. १६६६ सुधीना हिसाप; कमांड १०३मां वि. सं. १६६७थी वि. सं. १६६८ सुधीना हिसाप; अने कमांड १७७मां वि. सं. २०००थी वि. सं. २००५ सुधीना हिसापो छपायेल छे, अने वि. सं. २००५ पछीनो वर्षोना हिसापो पछु तैयार छे; अने ते थेणाक भहिनाओमां प्रगट करवामां आवशे. श्री ‘जैन’ नी ए आप्ती नोंध अमो साकार अहों उद्घृत करीये छीये.

—तंत्री

श्री जैन सत्यप्रकाशने चालु राखवा माटे शुं करवुं जोईये ?

संवत् १६६०ना इगण्डु वहि ३ रविवार ता. ४थी भार्य १६३४ना हिने अमदावाहां नगरेझो श्री. कस्तुरभाई भण्ठीजाईना शुभ प्रथास्थी अने अमदावाहना जैन-संघना आमं त्रुष्णी जैन समाजना जुदा जुदा समुदायोना आशरे सारी चारसे साधुओ अने सातसो साधीज्ञओतुं सुनि-संगेतन थयुं अने ते पती ते एकाह भहिनो चालु रह्युं, ते वर्खते अगियार दरावो सर्वानुभो पसार थथा हता. ए दरावोमां १०मो दराव नीये प्रभाणु हतो.

“आपणा परम पवित्र पूज्य शास्त्रो तथा तीर्थोहि उपर थता आप्तोपोना समाधानने अंगे आचार्य भद्राराज श्री सागरानंदस्त्रिल, आचार्य भद्राराज श्री विज्वस्त्रिल, पं-न्यासज्ज भद्राराज श्री लावण्यविज्यज्ज, सुनिराज श्री विद्वाविज्यज्ज अने सुनिराज श्री हर्षनविज्यज्जनी भांडणाये, ते कार्य नियमावली तैयार करी शरू करवुं, अने यील सर्व साधुओये ए व्याख्यतमां थेण्य भद्र ज्वर कर्वी. तेमज्ज ए भांडणीने जोईती सहाय आपवा श्रावकाने पछु प्रेरण्णा अने उपहेश आपवो.”

उपला दरावने अनुसरीने अमदावाही ‘जैन सत्यप्रकाश’ नामतुं एक भास्तिक प्रगट थाय छ. ए भास्तिकने २१ वर्ष थई गया छे ते छतां ए भास्तिक ऐताना पग पर जालुं रही शडे अटहुं वार्षिक लवाज्ज भेलानी शक्तुं नथी अने तेथा तेने दर वरसे भोटी घोट अमीने चालु राखवुं पडे छे. ए घोटानांनी डेटवीक घोट श्रावकोनी भद्रथी पूरी शाकाप छे, पछु तेम छतां आप्तीनी घोट तो अपभज्ज रहे छे. ए रिथतिमां ए भास्तिकना संचालकोने, ए भास्तिक चालु राखवा माटे वारंवार श्रावकोनी सहाय भेगववा माटे, निवेहो अहार पाउवा पडे छे अने गये वरसे अहार पडेला निवेहनने परिणामे सुंभृथ

२२०]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २१

समाचारमां अमे ए मासिकने सहाय भगे ते भाटे एक अपील प्रगट करी हती. ए अपीलना परिणामे अने थीज रीते गथे धर्मे ए मासिकने डेटलीक सहाय भगा हती अने ए मासिक चालु राखी शकायुं हुं. पण ए मासिक तरक्ष्यथी आ वर्षे पण एक निवेहन बहार पाडवामां आव्युं छे अने जैन जनतानी आर्थिक सहाय भगे ते भाटे अपील करवामां आवी छे. अमे ए अपीलने आवकारीए छीअे अने जैन जनता ए मासिकने चालु राख्या योग्य सहाय आपरो ऐमी आशा राखीअे छीअे. गथे वरसे अमे मुंभैस्त समाचारमां अपील करीने अमहावाहनी श्री आणुंद्दु कल्याणुल्ली पेठीने ए मासिक संबंधमां योग्य सहकार अपाय ऐमी धन्या दृश्यी हती अने रेह आयुंद्दु कल्याणुल्ली पेठीए इपिया पायसेनी आर्थिक सहाय ए मासिकना आर्थिक संचालन भाटे भोडली आपी हती. ए सिवाय पण थीज सहाय ए पछी ए मासिकने भगा हती, अतां ते हजु सुधी पग्लर थर्ह शक्युं नथी अने तेने अवाहना भाटे डोर्ध वधु उतम उपाय योजना नेहिअ एम धधा नेतो भाने छे. ए संबंधमां “श्री जैन सत्य प्रकाश” ना संचालकोने अमारी एक विनंती छे. तेमोए अत्यार सुधीना २१ वर्षना ज्वनमां डेटलो खर्ची छीयो, डेटली आवड थर्ह, क्लेन्ह डेन्ह सहाय भोडली, ध्यापार्ह खर्च डेटलो थेयो, लेखकोने डेटला इपिया आप्या, पगारहार भाणसेने डेटलो पगार अपाये वगेरने लगतो रीपोर्ट जैन जनता समक्ष नहेर रीते मूँडवो. अने जैन जनताने भलानी आपवुं के जे तेने अमुक २५मनी आर्थिक सहाय भगरो नहीं तो, ‘श्री जैन सत्य प्रकाश’ने प्रगट करवालूं अशक्य थर्ह पुऱ्यो. आटलुं क्यां पछी संचालकोए अमहावाहना, कलकाताना, भद्रासना, मुंभैना, सुरतना वगेरे भोटा शहेरोना आवका समक्ष एक उपेत्येशनर्हे जर्हने, मासिक भाटे एक कायमी इँड एकहुं कर्हुं अने ते इँडाथी मासिक चालु राख्युं. अमे धारीए छाये डे मासिकने चालु राख्या भाटे आवो डोर्ध उपाय योजना ज नेहिअ.

[अनुसंधान धृष्ट रुद्र थी चालु]

डोर्धार्क्कुं चुर्यमंहिर रथना आकारमां छे. तेनी चारे चालु भोटा २४ चको छे. आ चकोना आरानी वर्च्ये अर्थील आसनोवाली नानी नानी भूर्तिए छे, ने पुरी तथा भुवनेश्वरना मांदरमांनी भूर्तिए करतां नानी छे. पण धर्मी विशेष संघ्यामां छे.

आ मंहिरोनो धनिलास जेतां समलू शकाय छे के प्राचीनकाळमां डिलिगमां नेतोहुं. डेटलुं प्रभुत्व हुं अने आजे तेमां डेटलुं परवर्तन थयुं छे.

डोर्ध स्थापत्यप्रेमी आ लेखनुं परिशिवन करी उडिसामां जर्ह विशेष प्रयत्न करशे तो ते आ विषय पर वधु प्रकाश नाखी शक्यो, अने भारतने उडिसानी ग्राचीन संस्कृतिनुं साच्युं शान आपी शक्यो.

अष्टापद तीर्थ-ईतिहास

लेखक : पू. भुनिराज श्री. ज्ञानविजयल (निष्ठी)

[गतांकथी चालु]

सीमलाथी भानसरोवर

भारतमाथी मानसरोवर ज्वाना उ रस्ता छे. एक रस्तो सीमला थार्ने नीचे मुज्ज्य ज्य छे.

दिल्लीथी कालडा धरमपुर थार्ने सीमला ज्वाय छे. कालकाथी पग रस्ते पछु ज्वाय छे. कालडा पासे ४ मार्क्षि दूर पैनलेर गाम छे. आचीनकाणामा आ मोहुं नगर हुँतु. अहो एक दूनो छे, हावाडे छे ने पवित्र भनाय छे वै. सुह १५ थी वै. वह उ सुधी मेटो मेला भराय छे. अहो आचीन नगरना ठीवाभाथी तीर्थकरोनी धर्षण अंजित प्रतिभाया नीकाला छे. खील साहेब खुद्दिस्ट रेक्के ओइ धी वेस्टर्न वर्डमा ज्यावे छे के :—कियापीशीमां १० औद्ध महिरो अने भीज धर्मीना मणीने १००० महिरो छे. अहो दिगम्बरा, राजेशी चोलनारा अने हाउडाना आखुलणुवाला साधुओ रहे छे. आ नेहु संप्रदायना साधुओ दिगम्बर, पाशुपत अने कापालिक तरिके आणायाय छे. ते समयमां कियापीशी ए भारतनी उत्तरे पञ्जशील अने तामावेलीनुं पाटनगर हुँतु.

सीमलानो पहाड समुद्रनी सपाठी ७०८४ फूट जांच्या छे. सीमलामां नैन महिर छे, नैन धर्मशाळा छे. अनुं पशु भनाय छे के—लग्नान धार्थीनाथ अहो विचार्या छे.

(Parcvanatha Charitra. P. 236.

By Maurice B Comfield Baltimore).

आचीनकाथामा खु प्रसिद्धि पामेहुं सिंहपुरी ए ज्य आ सीमला होय तो अना संरक्षणथी भारतना ईतिहासनुं एक नवुं पानुं बिघडारो.

सीमलाथी भानसरोवर १३१ मार्क्षि छे. वयमां १३ पडावो आवे छे. ते ते पडावोना नामा, तेऽनाना फँसलाना मार्क्षि, अने तेऽनाना पहाडनी समुद्र-सपाठी जांचाईना फूटेनी तालिका नीचे ग्रमाणे छे.

सीमला जांचाई ७०८४ फूट. झेणु मार्क्षि १२, जांचाई ७६२ फूट. ओग मार्क्षि ६, जांचाई ७४२१ फूट. भतीआना मार्क्षि १०, जांचाई ७६६१ फूट. मारकडा मार्क्षि ११, जांचाई ६००० फूट केटगढ मा. ११, जा. ७२१२ फूट. आ मोहुं शहेर छे. तेनी एक तरह झाडीवागो जांच्या पहाड छे, यील तरह ४००० फूट नीचे आणामां पांच मार्क्षि दूर वार्टना ढेणाल्यामा सतलज वहे छे. अहो पुरुषो अने खीओ खूबसूरत छे. अहों पहाडी खीओने त्रण-चार पति होय छे. खीओ. घेतानुं काम करे छे. सौ डोर्ड गणामां अने भाथामां फूल पडेरे छे.

हात नगर मार्क्षि १२, जांचाई ३२०० फूट. आ सतलजने किनारे मोहुं शहेर छे. आनुं बीजुं नाम रामपुर छे. अहों औद्धना अने हिन्दुओना महिरो छे.

गौरा मार्क्षि ८,

सरहन मार्क्षि १०, जांचाई ७४४८ फूट. अहों कालिकानुं महिर छे. तेमां एककाले नर-भवि हेवातो होतो, होते देवातो नथी.

२२२]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २१

असिकुंड मार्गिल ३. अहों उना पाणीना ५ झरा छे, ते ४००० फूट ऊँडा छे. ते सतलजना मुख आगे रहेका छे. ते भीषुणी आजुथी रहेहो छे. तेऽना प्रवाहनो बेग सतलजमां अहों मार्गिल सुधी रहे छे अने तेना सीझेचा ४० फूट ऊँचे ऊडा नदीमां पडे छे. एक अरातुं पाणी एक दूवामां वाली लीधुं छे. तेमां यात्रागुओ स्नान करे छे.

टेरन्डा मार्गिल १३.

नामर भार्गिल १०.

वेंगटो थीन, मार्गिल ४, सतलजनो पूल छे.

आरनी मार्गिल ११.

शेणी मार्गिल १००, ऊंचाई ६१०० फूट.

भानसरोवर मार्गिल ३. अहों ऊँडी हवा छे, तेथी गरम कपडां पहेरवा पडे छे, पण हवा तंदुरसनी आपे छे. अहोंनी आना से, जून अने जुलाईमां करवी लेइयो.

भानसरोवरनी पासे भीज ऐ सरोवरो छे. भानसरोवरमध्यी अने ए पहाडीमध्यी सिन्धु (सिंगीकाबाच, लायनरीवर, सिंहमुखमध्यी नीकणी सिंहधुनी, लिङ्घवीओना राजचिंह सिंहथी प्रसिद्ध थेवेली सिंहधुनी नदी.) करमाला (भूर) सतलज (शत्रु) अने अल्पपुगा नदीओ नीड्ये छे. तेनी उत्तरामां अष्टापद याने डैलास छे केतुं तिषेटन नाम झान-यीन-पोय छे. तेनी प्रदक्षिणा २५ मार्गिलनी भनाय छे.

भानसरोवरतुं वर्षान् आ प्रभाणु भये छे : भानसरोवरतुं तिषेटी नाम Ma-Ban भा-ऐन छे. तेनो डिनारो गोण छे. अडीथी ढीरानी आणु जेवी ४ नदीओ, तिषेटना ६ विलागो, अने चारे तरहना नाना भोटा पहाडोनां दर्शयो भोउर लागे छे. सरोवर समुद्र सपाठीथी १५०८८ फूटी ऊंचाई छे. ते १५ मार्गिल लांधुं छे, ११ मार्गिल पहेणुं छे. तेनी पासे १ Rubshup इयशु-भीडूं सरोवर अने २ Salt-lake-सेलट लेक-भारुं सरोवर एम ऐ सरोवर छे. अन्ने सरोवर वर्चयेनी संघेणी भूमिमां उना पाणीना अराओ छे. भानसरोवरने कठि ८ धर्मशाळाओ छे. अडीथी पांच-छ हिंसमां प्रदक्षिणा थर्च शके छे.

(J. A. S. B. 1848 P. 165).

भानसरोवरती दक्षिणे पर्वतोनी हार छे. एकरी उपर चीन लेवाथी तेगो देखाव रमणीय लागे छे. सरोवरनी दक्षिणमां Gurlla Mandatta गर्वभान्डाटा अने उत्तरमां Kailas डैलास पहाड छे. आ अन्ने पहाडोनी वयमां आ सरोवर Oval लंब्गोण जेवुं अने Tarquoise ना आकारे देखाय छे. पासेना पहाडी शिखरो सईद, चमडता, स्थायी अने अरक्षीथी ढंकायेला रहे छे.

(Seven Hedines Trans Himalaya Vol. 2. P. 112).

(नंदलाल देवतुं लेश्वाराक्षिल दीक्षनोरी ओह एन-स्यन्ट एन्ड भेत्रीनीयल धनिद्या. पृ. १२३)

बौद्ध साहित्यमां एक Anava-tapta or Ano-tapta आनवा तपता अथवा आन तपता सरोवर अताव्युं छे केने तिषेटियो Langaksa लांगाकसा अथवा राक्षस ताल कहे छे के ५० मार्गिल लांधुं अने २५ मार्गिल पहेणुं भनाय छे. तेना भध्यलागमां एक कुंगरी छे.

सरोवरनी पूर्व हिंशामा Gyantang ज्ञानतांग (ज्ञान-तांग) नामतो विहार छे के

અ'ક : ૧૧]

અષ્ટાપદ તીર્થ-ધતિહાસ

[૨૨૩

અહુ પુરાણો છે, જેમાં લંડાપતિ રાજ રાવણુની પ્રતિમા છે. રાવણ આ સરોવરમાં સ્નાન કરતો હતો. ૧૫

એવું ક્રૈણવાય છે કે સતતજ નહીંનું ભૂણ આ સરોવરમાથી નીકળે છે.

નિખથી શ. પુ. ચરિત્ર પર્વ-૭, સર્ગો ૧માં વર્ણન છે કે:-રાવણ સરોવરના કમલનાં ફૂલો લાવી કૈલાસ ઉપર શ્રીતીર્થંકરોની પૂજા કરતો હતો.

અષ્ટાપદ તીર્થ

ઉપરના પ્રમાણેથી સ્પષ્ટ છે કે માનસરોવરની ઉત્તરે આવેલો કૈલાસ એજ અષ્ટાપદ પદ્માં છે. જૈન સાહિત્યમાં વર્ણન છે કે-અષ્ટાપદ સહિકનો છે. તેને ડેરી ડેરીને આઠ માળ જેવો અનાયો છે. તેને ઉપર સુવર્ણભંહિર છે, જેમાં વિવિધ રૂપોની તીર્થંકરની પ્રતિમાઓ છે, જેને હેખાવ આઠમી ભૂમિકા ઉપર ભંહિર અનાયું હોય એવો છે. ઉપરના વિદ્વાનોના વર્ણનમાં પણ આપણુંને એ જ વસ્તુનો આભાસ થાય છે.

રાજકુમાર જહનુંને તેની ચારે બાજુ આઈ કરી તેમાં પાણી ભર્યું હતું. લાંના બરઝનો જમાવ અને બાંડા સરોવરો પણ આ ઘટનાની સાક્ષી પૂરે છે.

જૈન સાહિત્યમાં ધતિહાસ છે:—દાંકાપતિ રાજ રાવણે અષ્ટાપદ તીર્થની યાત્રા કરી છે. માનસરોવર પાસેનું Rakhastal રાક્ષસ તલાવ અને જિયાન વિહારમાં રહેલી રાવણુની પ્રતિમા વગેરે પ્રમાણો એ યાત્રાની નિર્ભેણ સાક્ષી આપે છે. સંભન છે કે રાજ રાવણે ઉપર જતાં પહેલાં સ્નાન કરવા માટે આ તલાવ તથા વિદ્વાર અનાયા હશે. જિયાન તાંગ એ જિન ટૂંક કે જિન વિહારનું પણ વિકૃત શાખદાર સંભને છે. તેને અષ્ટાપદની તળેનીનું ભંહિર કહીએ તો એ બધ્યમેસ્તી કલ્પના છે.

શિવપુરાણના શ્લોકમાં લગ્નવાન શ્રીઋષ્ટબ્લારેવ અને મંગસમૂર્તિ શિવને એક અતાયા છે. બૌદ્ધ સાહિત્ય અષ્ટાપદ કે કૈલાસ પર શુદ્ધ-નિર્વાણ માનતું નથી એટલે વિના વિવાહેનકી છે કે આ Kangripoche ધારે કૈલાસ એ લગ્નવાન ઋષ્ટબ્લારેવની નિર્વાણમૂર્તિ અષ્ટાપદ છે. તિંમે શિદ્ધાલેભમાં વરસાયેલો અર્દત્ત-સ્થાન તરીકેનો શાખદારદેખ પણ આ જ વસ્તુને મુશ્ટ કરે છે.

અંતમાં સત્ય-ગ્રેભીયાની ફરજ છે કે આ અંગે વિશેષ શોધભોગ કરવાને સહિય પ્રથતન કરે. ડોઈ પ્રાર્થ્ય વિદ્વાયેભી કે તીર્થભૂતા ઉત્સાહી જૈન આ માટે પોતાના સમય અને લદ્ધમીને સહૃદપોગ કરે તો તે સાચી શાસનસેવા સાધી શકશે અને ધર્મ-પ્રધાન ભારતને આ અવસર્પણી કાળના આહિ નિર્વાણતીર્થનું હાન કરી શકશે.

અસ ! આવો તીર્થંકર ભક્ત જગતે અને જગતને અષ્ટાપદ તીર્થની પુન : લેટ કરવે એ પવિત્ર કામના પૂર્વીક આ લેખ સમાપ્ત કરું છું. [સંપૂર્ણ]

૧૫ કાળણ જિણહરાણ પૂંય, કુસુમેર્હ જલય થલગેહિ ॥ —(પદમચરિત્ર)

ઉપર જિયાનતાંગમાં રાવણુની પ્રતિમા અતાયા છે.

મધ્ય ભારતમાં કોપાવર પાસે બઢવાણીમાં કુંભકરણ અને ઇંદ્રજિતની પ્રતિમાઓ હોવાનો ધતિહાસ મળે છે.

ઘડવાણી વરનયરે દક્ષિણમાયમિ ચૂલગિરિસિહરે ।

ઇંદ્રજીદ કુંભયો ણિવ્યાળગયા ણમો તેસિ ॥ ૫ ॥

—(દિં જૈન નિર્વાણકાંડ)

દુક્ષિણા જૈનો અને જૈનધર્મ

લેખક : શ્રી. માહનલાલ દીપચંહ ચેટિકસી

દુક્ષિણામાં જૈનધર્મ ડેટલા લાંબા સમય સુધી ચાલુ હતો, તેમજ જુદા જુદા વંશના શાળવીએ તરફથી અને ડેવો ટેકા મળ્યો હતો એ વાત નોઈ ગયા પણી, અના હાસમાં જે ઉલ્લેખા દશ્ઠિગોચર થાય છે તે તરફ છોડતી નજર ફેરસી લઈ એ.

પાંચ સુલુલાંત જૈનધર્મ પ્રસારાસ આલા વાળણ્યાત જ્યા પ્રમાણે સંબંદર યાંચે શ્રમ કારણી-ભૂત જાણે ત્યાચ પ્રમાણે પલ્લવ રાજ્યાત જૈનધર્માસ પ્રતિકૂલ પરિસ્થિતિ નિર્માણ કરણાસ અપ્પાર યાંચે શ્રમ કારણીભૂત જાણે.

કંઈંદરની માઇક અપરનો જન્મ ખાલણ-કુળમાં નહોંતો થયો. તેની જાતિ ‘બેદ્વાલ’ હતી. એ શૈવધર્મ બન્યો. તે પૂર્વે જૈનધર્મની હતો ડેમડે તેણું ર્યેદા ડેટલાક સ્તોત્રો ઉપરથી એ વાત સિદ્ધ થાય છે. જૈન ઉલ્લેખ પ્રમાણે તરણ અવસ્થામાં તેણું જૈનધર્મની ભાગવતી દીક્ષા સ્વીકારી હતી. પ્રોદ્ધ વધ્યમાં એ શૈવધર્મ બન્યો. અને પાછલી વધ્યમાં દરીથી જૈનધર્મ થયો. શૈવધર્મ છોડતો જ્યારથી જૈનધર્મમાં પ્રવેશ્યો. ત્યારથી એના તરફ શૈવમાતાનુથાયોની નજર વિકૃત થઈ હતી. શૈવધર્મ અંગે એ ટીકા-નીપન લખરો કિંવા વિસ્ક પ્રચાર કરરો એ આશંકાથી તેનું ખૂન કરવવામાં આવ્યું.

બૌદ્ધ ધર્મની માઇક જૈનધર્મનોના સમ્બૂદ્ધા લોએ દુક્ષિણા થવા પામ્યો નથી જ. આઠ હજાર જૈન પાંડિતોને ધાર્થીમાં નાંખી પીલવામાં આવ્યા. તે સામાન્ય નહોંતો નહોંતા પણ વિવાધારી આગેવાનો હતા. આટલી પીઠ પડવા છતાં તેઓએ જૈનધર્મ તજનો નહોંતો. પાંચચ-વંશના રાજ્યકાળે — છુટી અને સાતમી સદીમાં — જૈનતું લારે વર્ચસ્વ હતું. એ વેળા શ્રમજ્ઞાઓએ અને જૈન આગેવાનોએ ધર્મપ્રચાર અંગે ટીક ટીક પ્રયાસ કર્યો છે. પાછળી ધર્મ-અસ્તુ વધી પડવાથી અને ડેટલાક કંઈ શૈવધર્માઓના પ્રયાસથી રાજ્યાઓની નજર વિકૃત અની, જનતામાં એ લોકાએ ખોટે પ્રચાર કરી ધર્માંધતા પેદા કરી; એટલે ઉપર જણુાભ્યું તેમ જેઓ મફુમ રહ્યા તેમને મરણ્યાતું ઉપસર્ગો સહન કરવા પડ્યા. ડેટલાકની એ શક્તિ નહોંતી એટલે તેઓ દેશ ત્યાં ગયાં; જ્યારે ડેટલાક જયરાધીની ધર્મ છોડી દ્યોએ. આ રીતે સુંદર પાંચ રાજ્યના સમયમાં ધર્માન્તર વધી પડ્યું. એક રીતે કહીએ તો ધાર્મિક ક્ષેત્રમાં એ કાળે મેટી કાન્નિ સર્જાઈ.

કિંદાવલેલાકન કરતાં જણાય છે કે તામિક દેશમાં ડી. સ. ના પહેલા શતકથી આરંભી પાંચ, છ, સાત અને આઠ પર્યંત જૈનોની સામાજિક, રાજકીય અને ધાર્મિક ક્ષેત્રોમાં ઓલભાવા હતી. અર્થાત જૈનો અધિકારના સ્થાને હતા તેમજ તેમનું રાજ્યમાં વર્ચસ્વ હતું. એ વેળા પ્રનિમાં જૈનધર્મના સંસ્કાર સુપ્રમાલુમાં પ્રસર્યો હતા. એ વેળા જનતસુખાકારી પણ સુધ્રમાણુમાં હતી.

શૈવમાર્ગીં અનુની સાધુઓએ ઉપર જોઈ ગયા તેમ સુંદર પાંચચના કાળે ધર્માંધતાતું

અંક : ૧૧]

દક્ષિણા નૈતો અને નૈતધર્મ

[૨૨૫]

વિષે ફેલાવ્યું અને એ કારણથી આઠ અને નવમા શતકમાં નૈતધર્મના શીરે સાંપ્રાતિકાની પનોતી એડી. ધીમે ધીમે એ જરૂતના હૃદયમાટી આસરતો ગયો.

પાછળથી એમાં વૈષ્ણવધર્માંથી સાથ પુરાવ્યો, લેની અસર દ્વારા શતકમાં સારા પ્રમાણમાં જેવાય છે. એ વેળા અનેક કુટુંબો પાંચ અને પચાં રાજાઓનો દેશ છોડી મહેસુર સંસ્થાનમાં આવી વચ્ચા. એ વેળા શ્વરણ-ઘેલગોલ નૈતધર્મનું ડેન હતું.

શ્વરણ-ઘેલગોલ અને એની આસપાસના પ્રહેશમાં ગંગાંશીય રાજાઓ રાન્યું કરતા હતા. નૈતધર્મ એ કાળે રાજધર્મ હતો. એ વેળા નૈતધર્મ વિદ્ધાનોએ વાહ્યમય-રચનામાં સારો ફોણા આપ્યો છે. આલઙ્ખોએ એ દિશામાં, તેમની બ્રહ્માંશી કરવામાં ઢીક કીક પ્રયત્નો કર્યા, પણ એમાં તેમને સહૃદાતા ન મળી.

ઉદાહરણ તરીકે 'કુરલ' વ 'શિલાંપદિકારમ' એ તામીલ ભાષાના વિષયાત અંથો તો નૈત વિદ્ધાનોની ચભતકારપૂર્ણ કૃતિઓ તરીકે આળાઈ ચુક્કા હતા. એ પછી ઉપર વર્ણવેદ આપતુકાળમાં પણ નૈત વિદ્ધાનોએ પોતાનામાં રહેલી સાહિત્ય-સંક્ષિપ્તા આજસ્ય કરી ભાષામાં દર્શન કરાવ્યા છે. એ રીતે પૂર્વનેની પ્રતિથાને તેમોએ જીવંત રાખ્યો છે.

નૈત મુનિ તિરુતકદેવર કૃત ચિત્તામણી નામના તામીલ ભાષાનો અંથ ભાલાકાલની ગણુનામાં અગ્રસ્થાન ભોગવે છે. એ જ ભાષામાં વ્યાકરણ સંખ્યા અંથ પરંતુ મુનિએ તેરમા શતકમાં સ્થેચ છે. આ ઉપરાંત ન્યોતિષ, ભાષા, વ્યાકરણ અને ગણિત આદિ સંખ્યાઅંધ વિષયો પર નૈત મુનિઓએ, સારા પ્રમાણમાં કલખ ચલાવી છે. મળગાપુર, બિંદુવાહી, તિરુમાલાહી આદિ ભાગોમાં નૈતોની વરતી વિરેષ પ્રમાણમાં હતી. હિંદુધર્મી રાજાઓનો આશ્રય હોવા છતાં, આલઙ્ખો વાહ્યમયના ક્ષેત્રમાં નૈતોની બ્રહ્માંશી કરા શકવા નહીં. જ્યારે દક્ષિણામાં મુસ્લિમનો સ્તુતા પર આવ્યા અને માધવાચાર્યનો પ્રલાલ વધવા માંડયો ત્યારે નૈતો સંખ્યામાં ધર્તવા લાગ્યા. આમ છતાં વાહ્યમયના ક્ષેત્રમાં તો નૈત અને હિંદુ એમ ઉલય ધર્મને સોસલું પડ્યું.

હિંદુ ધર્મના અંથોમાં નૈતધર્મ સંખ્યા ડલ્લેખ ખાલું કરી જેવા મળશે નહીં, અને કદાચ અગ્રત્ય વિચારી કરાયો હશે તો ત્યા એને વિકૃત સ્વરૂપ અપાયેલું હશે. એ કાળ સંપ્રદાયિક કંદરતાનો હતો. ધર્મપ્રેમ કરતો ધર્મનું વધારે અગ્રસ્થાન ભોગવતું હતું. 'આરી' પરિચિન્તિમાં એ કાઈ થાઈ ધયી ભાહિતી પ્રાતે થાય છે તે કર્ણલ ભોક્ષી, કોલાલુક આદિ અંગ્રે લેખકાના શોધપૂર્ણ અંથોને આલારી છે. તેઓએ સ્વતંત્ર દશ્શિ લખ્યું છે તે આપણા માટે શોષું ગૌરવભર્યું નથી જ. એ સંખ્યાધર્માં લેખકાના ભરાઈ ભાષાના શખદો અંતમો ટાંકચા છે, એ સમજાય તેવા છે. પણ એ પૂર્વે અહીં કલા વગર રહેવાતું નથી કે જ્યારે ઉપર વર્ણની તેવી સ્થિતિ દેશમાં પ્રવર્તતી હતી, ત્યારે આપણા પૂર્વનેએ લ. શ્રીમદ્ભાગવતેવની વાણીનો પ્રયાર કરવા, એ દ્વારા સાચા જ્ઞાન-રવિના કિરણો પ્રસારવા, વિશાળ જનસમૃહનો અઝાનદીપી અંધકાર દ્વિદેવા, ખાંતપૂર્વક એ પ્રયાસ સેવ્યો છે, એમાંતું આજે આપણે ડેનું કરી રહ્યા છીએ?

આજે દેશમાં અશાનિતું નામ નથી. સંપ્રદાયિકાએ ખૂલ્લો લીધો છે. અન્ય પ્રકારની સગવડોનો પાર નથી. વિદ્ધારની મુશ્કેલી નથી અને સાહિત્ય-રચનામાં નોષ્ટતી સામગ્રી સારુ પૂર્વે જેમ કલિકાળસર્વસ શ્રીમહ હેમયદ્રસ્તિશ્રિલને કાશમીર તરફે નજીર હોડાવવી પડી હતી, તેવી સ્થિતિ નથી. આપણે હરળીજ ન ભૂલીએ કે 'લોકાલોકપ્રકારાશકર' તો જ્ઞાન જ છે.

२३६]

श्री. लैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २१

कियानेता नंभर हेश-आराधक इपे नियत थेब छे अने सर्वाराधकनी पहरी तो। ज्ञाननेज लगवते आपेक्षी छे।' विश्वने आजे ज्ञानपिभासा अति भोटा प्रभाषुभां उद्दभवी छे, अ वेणा त्यागी गणु अने सभाजधुरिहो। प्रभाद सेवशे तो। पेशा शेषवाणा कथानक क्वेवा उपाखंब शारि चांटोरो। पौद्वगलिक धन चोरी जनार चोरो धरभडार विद्याय थर्ध गया तां सुधी शेठनी जिंधे न जिडी। जाणुँ छुँ, जाणुँ छुँ, इपी ज्वाल्य चालु रही। आधे पतिलक्ता पत्नीनी हुःआता दिक्केउच्चारतुँ पउयुँ के 'तमारा जाणुपेखुभां धूणी परी।' विश्वना विद्वानोने अडित करी हे अवो। अणुभूलो वाससो आपणो हेवा छतां अनी जाणु सरणी लैनेतर वर्णना भोटा आगने न होय, तो अभां दोषखागी डेणु छे ? आ प्रश्न विचारणीय नथी के ?

"वांगमय व शिल्पकला यांचो जैनांना अत्यंत आवड। शिल्पकला व वांगमय यांचा अभ्युदय व विकास करितांना कोणत्याहि स्वार्थी विकारासने वश झाळे नाहीत। तामील वांगमयांत जैनधर्मीयांनी टाकलेली भर अमूल्य आहे। संस्कृत शब्दांच्या धातूपासुन अनेक तामिल शब्द जैनधर्मीयांनी बनविले; अनेक संस्कृत शब्दांचे उच्चाराचे दृष्टिने फेरफार करून त्यांना तामील पोशाख चढविला। कोणत्याहि विशिष्ट देवाच्या, अगर धर्माच्या नांवाचा उछेल न करितां आपल्या धर्माचा उपदेश करण्याची हातोटी जैनांना साध्य झाली होती; व त्यांचे प्रत्यंतर कुरल व नालदीचार या ग्रन्थातून मिळते। मनाचा खरा समतोलणा असल्या खेरीज अशी कृति शक्य नाही। तामील भाषेपेक्षांहि कानडी भाषेवर जैनांचे अनंत उपकार आहेत। कानडी भाषेचे उत्पादक व संरक्षक जैनच असें म्हटल्यासने वस्तुस्थितिस सोडून होणार नाहीं। ई. सनाच्या बाऱ्या शतकाच्या मध्या पर्यंत जैन व जैन वांगमय म्हणजेच कानडी भाषा व कन्नड वांगमय असें मानावें लागतें सर्वांत जुनें व सर्वोक्तुष कन्नड वांगमयांची लेखण जैनांची आहे। जात्यभिमान व धर्माभिमान यांच्या मोहास बळी न पडतां केवळ वांगमयप्रेमाल्लातर जैनांनी वांगमयसेवा केली। स्वतंत्र ग्रन्थलेखना बरोवरच अनेक उक्तृष्ट संस्कृत ग्रन्थांचे कानडीत रूपांतर केले। पंप वगैरे जैन कवि व त्यांच्या काव्यांचे अद्वितीयत्व या पुढे एका स्वतंत्र प्रकरणांत देण्यांत आलें आहे."

(दक्षिण भारत लैन व लैन धर्म पृ. ६७.)

भराडी लाषाना उपरना अवतरणुभां डेल्ही लीटीभां पंप वगैरे कविओनी कृतिओ संभंधी विचारणा। करतां पूर्वे अडिसा, भूर्तिपूजा आहि संभंधे लेखक ने डेटलीक वात आवेभा छे ते पृष्ठी न्येवाशे।

[क्रमशः]



तेरापंथ-समीक्षा।

लेखक : पू. प. श्री. हुरद्धरविजयल गण्डी

[लेखांक पांचमो]

तेरापंथनां केटलांक मंतव्यो पूर्वे जणावया छे. तेना अनुसंधानभां भीजां केटलांक तेवां मंतव्यो, के लेभां मुख्यरत्ने हया-हान संभवी विकृत-विद्यप विचारणाए भाग भजव्यो छे ते आहीं जणावय छे.

शास्त्र अने आगमेनी वातो वगर समने ऐम ने ऐम रङ्गु करवाथी अनर्थांनी परं-परा जन्मे छे. कया प्रसंगे केने आश्रयाने ए वयन कहेवायु छे तेनु लक्ष्य नेई ए. अमुक कल्पवाणाने करणीय होय ते भीजा कल्पवाणाने करणीय होतु नन्ही. सर्वथा करणीय अने सर्वथा अकरणीय ए प्रभाषे सर्व भाटे एक सरतु समजवा-समजववाथी धणी गेरसम-जूतिशो उली थाय छे.

१५. रासडीथी-होरडीथी आधिका ज्ञाने-पशुओने भूष-तरसथा आकुणव्याकुण हेणीने छाडे तो साधुने चोभासी प्रायश्चित्त आवे.

१६. कोठ आहि अनेक व्याख्यास्त ज्ञाने अनुकंपा करीने साजा करे ए सावध. नं ए प्रभाषे करी शकातु होय तो पूर्वे अनेक लम्बिधारी मुनिशो ए कार्य डेम करती न हाता.

१७. साधु अनुकंपा करे तो वैराग्यरो उपदेश आपे, चारे आहारा पच्यभाषु करावे.

१८. भूता पडेला गृहस्थने साधु भार्ग वातावे तो चार भासतु प्रायश्चित्त आवे, अत्यंत दुःखी ज्ञाने जगलभां नेई ने चार शरणां करावे, भार्ग पूछे तो गैन शारे. जुही जुही धर्म संबंधावे.

१९. आ लोकनी अनुकंपा वंधनु कारण छे. जानाहि त्रण वगर अन्य धर्म नन्ही. साधु अने आवक्ने ए समान छे. साधुने करणीय छे ए आवक्ने पशु करणीय छे अने साधुने अकरणीय छे ते आवक्ने पशु अकरणीय छे. अमुत सर्वने समान छे.

२०. आधिका ज्ञाने कूटवा धन्ते तेनी अनुकंपा करे तेने चोभासी प्रायश्चित्त आवे अने तेमा धर्म भाने तो सम्यक्तव जय.

२१. ज्ञाने आधि-धावे तो संयम जय, पच्यभाषु भागी.

२२. साधु कोईतु अवरु-भरवु याहे नहि. साधुने तो मुक्तिनी रट लागी होय.

२३. गृहस्थना धर्मां लाय-आग लागी छे, धर्मांथी अहार नीडणी शकातु नन्ही, अणता ज्ञाने चोस पाडे छे, तोपशु साधु कमाड जिवाडे नहि.

२४. द्रव्यथी ने भावाथी लाय लागी छे, तेमां कोई वैरागी होय तो तेने उपदेश आपाने समजवे, एनी अनुकंपा करे. जन्म-भरणनी लायथी भयावे अने तेनु कार्य साधी आपे. अनुकंपा करवाथी हळ आवे.

[१५थी २४ सुधीभां कहेली केटलीक वातो मुनिशोना परियमां आवता ज्ञाने अन उपर असर करी जय एरी छे. पशु जयारे ए वातो सूक्ष्म दृष्ट्या विचारवाभां आवे लाई

२२८]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २१

पौत्रानी जड़ता माटे ऐह थाय एवी छे. तेमां साधुने अंगे क्लेवायेलुं गृहस्थने माटे पण समान छे ए खूब ज भयकर छे. लाल अने गेरलाल एम करणीमां होय छे. साधुनी उच्च-करणी एकांत लालनी होय छे. ए करणीमां लीन अनीते रहेला मुनिने माटे उपर जणुवेली करणीओ लालमां हानि करनार छे ने तेवी करणीमां रस ज-मे तो उच्च करणी साडी शकाय नहि. एट्टे उच्च करणीनी सावधाना तरह लक्ष्य सतत जगृत रहे माटे साधुओये आवा प्रसंगे। तरह लक्ष्य आपवु नहि—अने अपार्द्ध जय तो ग्रायचित करुं, के क्येही पांख भूण लक्ष्य स्थिर थर्द्य जय. पण आवड सावद ग्रवृत्तिमां रहेलो छे. तेना कार्यी सावद छे ने तेमां तरतमता छे. शावकना सावद कर्योमां भषासावदवाणा, अस्पसावदवाणा, एवा लेहा पाडवा जड़ी छे. सावद हेवा छतां लाल अपावनारा, ओछा लाल थाय एवा, भैरो लाल थाय एवा; ए प्रभाषे पण विलाग करवो आवश्यक छे. तेमां लालालालनी विचारणापूर्वक कार्य करवामां आवे ने लाल विशेष होय अने अलाल थोडा होय तो परिणामे लाल ज बाकी रहे छे. एवां कर्येन सावद गणुवीने अकरणीय अतावदा ए मूढता छे.]

२५. सिंह, वाम आहि डिंसक श्रवो धणु हेप्पीने तेने आरवातुं कहे तो प्रथम महान् तत लागे, अने एने डार्ढ भारतो होय तो तेने कहे के ‘न मार’ तो साधुने तीके करणे डिंसा-डिंसानुमोहनदृप डिंसा लागे, एम सूयगडांगमां कहुं छे.

२६. आ लोक, परलोक, ज्यवन, भरणु अने कामभोग ए पांचने धर्मवामां अतियार लागे. पौत्राना धर्मचे एमां पण पाप लागे छे तो पारकानो सन्ताप डाणु धरमां धावे, ज्यवुं-भरवुं धर्मचे ए असानी—अने ज्यवुं-भरवुं न धर्मचे ए सुजानी.

२७. पवन, पाणी, शीत अने ताप रहे या न रहे, राजविशेष ठगे, सुकाण थाय, उपद्रव ठगे ए सातने समतावंत मुनि धर्मचे नहि. आवी धर्मांगो करनी ए रागदृष्टी परिणामि छे एम दशवैकलिकमां कहुं छे.

२८. साधु नावमां एठा छे, नाव हूदी छे, तेने छिं पड़ुं छे ने लाथी नावमां पाणी भराय छे. भीज डार्ढने एनी अपर नथी अने साधुने अपर छे, जे ए छिं के हाट साधु अतावे तो तेना त्रतमां लागो लागे. आयारांगमां आ वात छे.

[सूत्रने नामे क्लेवायेली उपरनी वातो डेट्टी गेरसमज जिजी करे छे ए स्पष्ट जणुय एवुं छे. सिंह वगरेने डार्ढ भारतुं होय ने तेने अटकाववो. एमां पण साधुने होप ? सूत्रने नामे आवी वातो करनी ते योग्य नथी. डार्ढ पण संसारी आत्माओना ज्यव-भरणु धर्मवा, तेओ संसारिक सुप्तो लोगवे एवा प्रथतो करवा ए जुदी वात छे. अने हया ए जुदी वात छे. हया—अनुकंपा ए अन्तरंग भाव छे, तेमां सामानुं हुःभ हूर करवानी भावना होय छे. ए भावनाने जे पाप गणुवामां आवे तो सुङ्गत जेवुं कार्य रहेश नहि. भीजुं आ प्रभाषे जे ते ते प्रवृत्तिओ धर्मचा वगर न थर्द्य शक एम होय तो चेते—साधु ने आनपानाहि ग्रवृत्तिओ करे छे ते पण धर्मचा नहि संलवे अने तेने पण सावद गणुवीने तेने निषेध प्राप थरो. एट्टे विवेक करवो आवश्यक छे. एकनी एक प्रवृत्ति करता एक महाकर्मनो वंध पाउ अने भीजे महानिर्झरा करीते जाये जय.]

[क्रमशः]

ଓଡିସାନାଁ ମଂଦିରେ

ଲେଖକ : ପ୍ର. ଶୁନିରାଜ ଶ୍ରୀ. ହରନିଳିଜୟଳ୍ଜ ନିଷ୍ଠା

ଅଧ୍ୟାତ୍ମି ଅଛି ହାଜର ପର୍ଯ୍ୟ ପଢ଼େବା ଵୈଶାଲୀମାଂ ଗଣୁତମ ରାଜ୍ୟ ହିଁ, ତେନା ଅଧ୍ୟକ୍ଷୁ ଚେତାମହାରାଜ ହତୋ. ତେନ ଶୋଭନ ବେଗେ ଅନେକ ପୁତ୍ରୀ ହତା, ୭ ପୁତ୍ରୀଙ୍ଗୋ ହତି. ଏ ଲିଙ୍ଗଚିହ୍ନ ବଂଶନୋ ହତୋ ଅନେ ଜୈନ ହତୋ. ଵୈଶାଲୀନା ଲିଙ୍ଗଚିହ୍ନଙ୍କୋ ଲଗବାନ ପାର୍ଥନାଥନି ଶାସନପରପରାନା ଜୈନ ହତା. ଆ ସମୟେ କଲିଙ୍ଗମାଂ ସୁଲୋଦ୍ୟନ ରାଜ ହତୋ, ତେ ପଣ୍ଡ ଜୈନ ହତୋ. ତେନା ରାଜ୍ୟକାଳମାଂ କୁମରଗିରି ଅନେ କୁମରାଜିରି ଉପର ଲୋ ଅଧ୍ୟକ୍ଷେତ୍ର ବନ୍ଦୁ ହିଁ ହିଁ ତେମାଂ ସୁଵର୍ଣ୍ଣନି ଜିନନ ପ୍ରତିଭାନି ପ୍ରତିଷ୍ଠା କରିବାମାଂ ଆବା ହତି ଅନେ ହଶ-ଅଗିଥାର ଜୈନ ଶୁଦ୍ଧାଙ୍ଗୋ ଭନୀ ହତି. ଏ ରାଜନେ ସଂତାନମାଂ ଭାବ ଏକ ପୁତ୍ରୀ ହତି କେ ଚେତାମହାରାଜନା ପୁତ୍ର ଶୋଭନରାଜ ସାଥେ ପରଶୁରାମୀ ହତି.

ମଗଧରାଜ ଅଜାତଶୁତ୍ରୁରେ ଚେତାମହାରାଜନେ ଜ୍ଞାତ ଵୈଶାଲୀନୋ ନାଶ କରେ ଏହୁଲେ ଶୋଭନରାଜ ତୋ କଲିଙ୍ଗ ଚାଲ୍ଯୋ ଗ୍ଯୋ ଅନେ ତେନା ଭିଜ ଭାର୍ତ୍ତାଙ୍ଗୋ ନେପାଳ ତଥା ତିଷ୍ଠେଟ ଚାଲ୍ଯା ଗ୍ଯୋ. ଲିଙ୍ଗଚିହ୍ନ ଶୋଭନରାଜ ରାଜ ସୁଲୋଦ୍ୟନନା ଭରଣ୍ୟ ଭାବ କଲିଙ୍ଗନୋ ରାଜ ବନ୍ଦୋ. ତେନା ବଂଶଜେତ୍ରେ ଲାରଥି ୪୦୦ ପର୍ଯ୍ୟ ସୁଧୀ କଲିଙ୍ଗନୁଁ ରାଜ୍ୟ କୁରୁଁ ଛେ, କେମାଂ ଚିନ୍ତରାଜ, କ୍ଷେତ୍ରରାଜ, ବୀଭୁରାଜ-ଭାରବେଳ, କରାରାଜ ଅନେ ବିଦୃହରାଜ ବେଗେ ରାଜଙ୍ଗୋ ବିଶେଷ ଉତ୍ସେଖନିୟ ଛେ.

କଲିଙ୍ଗନୁଁ ଆଧୁନିକ ନାମ ଓଡିସା ଛେ. କଲିଙ୍ଗନୁଁ ପାଟନଗର କନକପୁର ହିଁ, ଜୈନା ଭିଜା ନାମେ ଜୋଗପୁର ଅନେ ଭୂତନେଶ୍ୱର ମ୍ୟୋ ଛେ. ଜଗନ୍ନାଥପୁରୀ ପଣ୍ଡ ତେନା ଉପବିଷ୍ଟାଗ ଛେ. ଅଛି ବିଶାଖ ରାଜବିହାର ହତୋ କେ ତିର୍ଥିଷ୍ଟ୍ୟ ହତୋ.

ପାଟଲିପୁରନୋ ରାଜ ଆହମୋ ନାହିଁ ଚିନ୍ତରାଜନା ସମୟମାଂ କଲିଙ୍ଗ ଉପର ଚର୍ଚା ଆବ୍ୟୋ, ଅନେ ଲଗବାନ ଅଧ୍ୟକ୍ଷେତ୍ରୀ ସୁଵର୍ଣ୍ଣ ପ୍ରତିଭାନେ ପାଟଲିପୁର ଲାର୍ଦ୍ଦ ଗ୍ଯୋ. ସମ୍ଭାବ ଅଶୋକ ପଣ୍ଡ ବି. ନି. ସଂ. ୨୩୬ମାଂ କଲିଙ୍ଗ ପର ଚାର୍ତ୍ତ କରି କ୍ଷେତ୍ରରାଜନେ ହରାଣୀ ଅଛୁ ମେଘୀ ବିଜ୍ୟ ମେଘନ୍ୟୋ ହତୋ. ବୁଦ୍ଧରାଜେ କୁମରଗିରି ତଥା କୁମରାଜିରି ଉପର ୧୧ ଜୈନ ଶୁଦ୍ଧାଙ୍ଗୋ ଡେତରାଣୀ ହତି. ବୀଭୁରାଜ ଭାରବେଳ ପାଟଲିପୁରନା ଦ୍ୱାରାରାଜ ପୁଷ୍ପଭିତ୍ରେ ନକ୍ଷାତ୍ର ପେତାନୀ ଧାକ ବେସାତ୍ର ହତି. ଅନେ ଆହମୋ ନାହରାଜ ଲଗବାନ ଅଧ୍ୟକ୍ଷେତ୍ରୀ କୁମରାଜିରି ନେ ସୁଵର୍ଣ୍ଣପ୍ରତିଭାନେ ଲାର୍ଦ୍ଦ ଗ୍ଯୋ ହତୋ ତେନ ପାଇଁ ଲାଗି କୁମରଗିରି ପର ନିରାଜନାନ କରି ହତି.

ଏବ୍ୟୋ ପଣ୍ଡ ଉତ୍ସେଖ ମନେ ଛେ କେ, ଚୌଦ୍ଦ ପୂର୍ବଧର ଆ. ଲଦ୍ଧାହୁସ୍ଵାମୀ ବା. ନି. ସଂ. ୧୭୦ମାଂ କୁମରଗିରି ପର ପ୍ରତିଭା ଧାରଣ କରି ସର୍ବେ ଗ୍ଯୋ ଛେ. ଆ. ସୁରସ୍ଥିତ, ଆ. ସୁମତିଅଛେ ଆ. ଗିରି ପର ଧ୍ୟାନ ଜମାତୀ ସୁରମିତନୋ ଏକ ଫୌଡାର ଜ୍ୟ କରୀ ଛେ. ଅନେ ଆ. ବଜାସ୍ଵାମୀଙ୍ଗେ (ଭିଜ ଲଦ୍ଧାହୁସ୍ଵାମୀ) ପଣ୍ଡ ପୁରୀମାଂ ଚୋଭାସୁନ୍ଦରୀ ପୌକ ରାଜନେ ଜୈନ ବନାବ୍ୟୋ ଛେ.

କଲିଙ୍ଗମାଂ ଆ ୧୦୦ ପର୍ଯ୍ୟନ୍ତ ଗାଣାର୍ମ ସେଂକରେ ଜୈନ ମଂଦିର ବନ୍ଦୋ ଛେ, ଧର୍ମ ଶୁଦ୍ଧାଙ୍ଗୋ ଭନୀ ଛେ, ତିର୍ଥ ସ୍ଥପାନୀ ଛେ. ଶିଦ୍ଧ ତଥା ଵିଵିଧ କଣାନେ ଉତ୍ସେଖ ବିକାଶ ଥିଲୋ ଛେ. ଏକହି ଜୈନ ଧର୍ମ କଲିଙ୍ଗମାଂ ପର୍ଯ୍ୟ ସୁଧୀ ଫୂଲ୍‌ପ୍ରେଇଲ୍‌ଟ୍ୟୁନ୍‌ମ୍ୟୋ ଛେ.

२३०]

श्री. नैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २१

बौद्ध धर्म समाट अशेषाङ्कना समयमां क्लिंगमां आव्यो. तेणु पण अहीं बौद्ध भांदरो भनाव्या, गुरुओं भनावी.

वैदिक धर्मशास्त्र तो क्लिंगमां ज्वामां पाप मानतां हतां, क्लिंगमां जर्च आवनारे आयथित आपाता हतां. क्वारण ? त्यां जनार नैन धर्मधी प्रभावित थर्च आवतो हतो. परंतु वैदिक धर्मे पणु धार्मेभी त्यां प्रवेश कर्यो, अने विडमनी आहमी शताख्दीते छेदे तो एज क्लिंग संकराचार्यनी जेहाह्या वैदिक धर्मतुं केंद्र अनी गयो. त्यारथी अहीं शैवधर्म, वैष्णवधर्म अने शाकाधर्मतुं प्रायत्य वध्युं छे. धर्मगो संधर्ष जिडतां बौद्धो भारत छेती भारतनी भहार चाल्या गया. अने नैनो पूर्वभारत छाडी भव्यभारत—पश्चिम भारतमां चाल्या गया. शैवाचे तेजाना भंडिरो ऐतानां धर्मस्थान भनावी दीवां. त्यारथी जगनाथतुं भंडिर नैन तीर्थ मरी शैवधाम वन्युं छे, लिंगराजतुं भंडिर पणु नैन भंडिर मरी शिव, नंदी अने गरुडना भिक्ष संडेतवाणुं भनी गयुं छे.

नैन, बौद्ध, शैव अने वैष्णवेनां हजरो भंडिरा आने क्लिंगमां विद्यमान छे.

श्री. राधेश्याम पुरोहित ज्यावे छे कै, भारतीय संस्कृतिना विकासमां धर्मेनी मोटो हाथ छे. शेथी असंभ्य भंडिरातुं निर्माण थयुं छे. आ भंडिरा दूरदूरना यानिकानी भजिनो भरपूर भनावे छे, एवज रीते शिल्पकणा, स्थापत्यकणा अने इतिहासना ग्रेमोग्नेते ऐतानी तरइ आळक्की नवी नवी ग्रेश्या आपे छे. सरकारी आळक्का प्रमाणे लुप्तनेश्वरमां प०० भंडिर विद्यमान छे. भारतमां भीज डैर्च स्थाने आटलां भंडिरा नवी. आ भंडिरामां डारेही तथा नक्करी विशाळ अभाष्यमां भले छे, नैने जेतां उडिसानी ग्राचीन डणा तथा संस्कृतिनो सुदूर परिच्य भले छे. पुराणा लुप्तनेश्वरनी पासे ज नवुं लुप्तनेश्वर आधुनिक ढंगथी वसी रख्युं छे, ए आने उडिसानी राजधानी छे. अहीं ए हजर वर्ष पहेला नैनोचे भंडिर भनाव्यां छे, नेमाना धार्यां तो आने पणु ऐतानी विक्रितानी साक्षी आपी रख्यां छे. अत्रेती जनता आने छे कै, आलखेचे पणु नैनोनी देखादेखी भंडिर भनावी भंडिरानी संभ्यामां वधारो कर्यो छे. ‘उद्यगिरि अने अंडगिरि श्वेताभ्यर नैनेतुं तीर्थस्थान छे.’ घोणा पहाडी पर अशेषाङ्कनो ध्याली लेख छे. लुप्तनेश्वरना भंडिरा मुख्यतया पांच काणविलागमां वडेच्या शाकाय छे. नेमां शत्रुघ्नेश्वर, परशुरामेश्वर वगेरे भंडिरा ग्राचीन छे, मुण्डगिरि, उद्यगिरि, लकितागिरि, अने रत्नगिरि उपरना भंडिरा लौमधालीन छे. अलेश्वरतुं भंडिर लुप्तनेश्वरथी १ मार्गव दूर छे ए सोभवंशी राज उवतक्षरीनी माताचे भनावेल छे. आ भंडिर अने लिंगराजतुं भंडिर अंडकालीन छे डेमडे अनेनी डारेही वगेरेमां धार्यी साम्यता छे, गंगवंशी राजाच्योना ३०० वर्षना राज्यकामां वन्यां छे. अनन्तवासुदेव, पार्वती, राजराणी, भेदेश्वर, आस्करेश्वर वगेरे भंडिर वास्तुक्लाशी वधु परिचित छे.

(‘लुप्तनेश्वरडे भंडिर’ ता. १७-१०-१५५५, नवभारत टाईम्स, हिंदी.)

योहर राजेन्द्रसिंह (ज्यवलपुर) ज्यावे छे कै, उडिसानी स्थापत्यकला तथा मूर्ति-कलाना उत्कृष्ट नमूना पुरी, लुप्तनेश्वर, डारेही भंडिर अने उद्यगिरिनी गुक्षामां भले छे.

उद्यगिरि तथा अंडगिरिनी गुक्षामो ध. स. पूर्वे चौथी-पाचमी सहीमां अनी छे, नेमां ग्रसिंह समाट आरवेलो शिवालेख पणु भले छे. ए लेख धतिहासमां अहुं धीमती

અંક : ૧૧]

ઉડિસાનાં મંહિરો

[૨૩૧

મનાથો છે. ગુરુજ્ઞોમાં નૈન, બૌદ્ધ તथા શૈવમતની ધર્ષણી મૂર્તિઓ છે. ખંડગિરિમાં અધિકાંશ ભગવાન મહાલીરની મૂર્તિઓ છે. રાણીગુરુજ્ઞોમાં વિવિધ દર્શયોત્તું ચિત્રણ છે, દ્રેકમાં સલ્વ જેવું કલાકણ છે. ભુવનેશ્વરનાં મંહિરો (૧) શ્રમણુકણ, (૨) લૌમકણ, (૩) સોમવંશકણ, (૪) ડેસરીવંશકણ અને (૫) ગંગવંશકણ એમ પાંચ કાળવિલાગમાં બનેલાં છે. ભુવનેશ્વર તો મંહિરોતું નગર છે. ત્યાના પંડ્યાઓ માને છે કે, અહીં એક લાખ મંહિરો છે, પરંતુ ૧ હજાર મંહિરો તો હશે ૧૮. વગેરે કરોડે.

(“ઉડિસાઠી મૂર્તિકલા” તા. ૧-૧-૧૯૫૬ રવિવાર; હિન્દુસ્તાન, હિન્દુ)

એડંડરે સૌ ટોઈ જણે છે કે, કલિંગ-ઉડિસામાં જે મંહિરો છે તેમાં જૈનધર્મનો મેરો ફોણો છે. ધર્ષણી મંહિરો ભીજા ધર્મશાસ્કોના હાથે પલરાઈ ગયા છે છતાં તેમાંની ટોઈ ટોઈ વિશિષ્ટ ધર્મના તેના અસલી સ્વરૂપની આકૃતિ કરાવે છે.

ભુવનેશ્વર અને તેની આસપાસમાં નીચે દર્શાવિલ સ્થાનો વધુ પ્રસિદ્ધ છે.

(૧) ઉદ્ઘયગિરિ-ખંડગિરિ : એ શૈવાલ્યર નૈનોતું પ્રાચીન તીર્થસ્થાન છે. નૈનરાજ ખારવેલે અહીં ધોળ પહાડી-હાથી ગુરુજ્ઞોમાં આલીદિપિરિમાં-પ્રાકૃતલાખામાં મેરો લેખ ટોતરાવ્યો છે, જેમાં પોતાના રાન્યકણની ૧૩ વર્ષની કાર્યવાહી વર્ણવી છે. આ લેખે ધતિહાસ ઉપર સુંદર પ્રકાશ પાડ્યો છે. ઉદ્ઘયગિરિમાં ૪૪ અને ખંડગિરિમાં ૨૧ ગુરુજ્ઞો મળી છે. એકેક પચથના સીધામાં એક સાથે સાતસાત આઠાઠ ગુરુજ્ઞો કાઢેલ છે. ગુરુજ્ઞની બહારની દીવાલો પર વિવિધ ચિત્રો છે. રાણીગુરુજ્ઞો તો મનુષ્ય, સ્ત્રી, પણ, પક્ષી, વૃક્ષ, વેલ, ફૂલ, પાન, પૂજા, અક્રિત, નૃલ, શુંગાર, યુદ્ધ વગેરેની એવી આકૃતિઓ ચીતરી છે કે જેનારને તે તે વસ્તુઓ ફુઅહુ લાગે છે.

(૨) ભુવનેશ્વર : ભુવનેશ્વરનું આ મુખ્ય મંહિર છે જેનું બીજું નામ લિંગરાજ પણ છે. તેનું કંપાઉન્ડ ૫૨૦ ફૂટ લાંબું, ૪૫૫ ફૂટ પહોળું છે. ચારે બાજુ ડિલ્વો છે. તેમાં વિમાન, જગમોહન, નટમંડપ અને બોગમંડપ એમ ચાર વિલાગ છે. વિમાન વિલાગ ૧૪૭ ફૂટ ઊંચો છે, તે પ્રાચીન છે. જગમોહન તથા નટમંડપ ત્યારાંદ અન્યો છે અને બોગમંડપ ગંગરાજનાં એના કાળામાં અન્યો છે. ભુવનેશ્વર તથા ટોષુંડ મંહિરમાં સ્થાપત્યકણ તથા મૂર્તિકણાં અહૂં ભૂત છે.

ભુવનેશ્વરનું મંહિર અસદમાં નૈન મંહિર છે. આ મંહિરના શિવલિંગ, જલહરી અને ગભારાનો શિદ્ધપદ્મશાસ્કોત્ત ગણિત પ્રમાણે મેળ ભળતો નથી, આથી ધર્ષણી સ્થાપત્યવિહો માને છે કે, આ મંહિર આ શિવલિંગનું નથી, શિવલિંગ પાછળથી અક્રમત સ્થાપિતકર્યાં હોય એમ લાસે છે. બોગમંડપ વગેરે પાછળથી વધાર્યા છે એ પણ એ જ વાતની સાક્ષી આપે છે. લિંગરાજ મંહિરની મુખ્ય મૂર્તિ શાલિયામ-શિલા જેણી મનાય છે. સલામંડપમાં તેની સામે નંદી તથા શાસ્કડ વગેરેની મૂર્તિઓ જેણાડી છે. આ મંહિરની દીવાલમાં ધર્ષણી અંલીક મૂર્તિઓ (કોરણી) છે. સુધારકો તેને લરી દેવા કે તોડી નાખવા ઈંચે છે. આમાં ટોઈ રાજ કે મહાપુરુષની જીવનધર્મના અક્રિત છે, પણ તે કોણી છે તે સમજ શકતું નથી. આ ચિત્રો પુરીના ચિત્રો કરતા નાનાં છે.

२३८]

श्री जैन सत्त्वप्रकोश

[१५] २१

(३) जगन्नाथ : अनुभीव नाम जगन्नाथ मंहिर छे. आ मंहिर २१४ फूट ऊँचूँ छे. आ मंहिर असलमां लिघ्नी राज्यांशु नैनभंहिर छे, तेभा गाडी उपर पश्चासनवाली उन्नप्रतिमाओ। विराजमान छे, मुख्य प्रतिमा 'पासर्पणाणु' होतानु भनाय छे, आजे तेनी उपर यार लुम्बवाणु लाकडानु ऐणु चडाए राखे छे. आथी आ उन्नप्रतिमा छे, अवो ध्याव होइने जलदी आवतो नथी. ज्ञेन उन्नप्रतिमानु शान छे ते तो आ प्रतिमा अने लेई ने क्षमते छे ३—

आ जैन तीर्थकरनी प्रतिमाओ। छे. आ लाकडानु ऐणु साडाहार वर्ष अहवावाय छे. जनताने वहेम छे ३, आ ऐणु अहवानार मंहिरनो अध्यक्ष, मंहिरनो भेडो पूजारी अने सुतार छ भिण्हामां भरी जय छे. हमेशा आ ज्ञेनाने पञ्चीश वर्ष वीती गया छे, तेनु कारण यसु आ वहेम ज भनाय छे.

अहीं विशेष ध्यान देचे जेणी धटना छे "जगन्नाथनो भात." ज्ञेनाना साधर्मिक सहकार जभणुनु प्राचीन काणथी 'चाल्यु' आवतु अभाँड अनुकरण छे. आ भातमां आसाड-छेट भनाती नथी.

ओ नषु प्रतिमाओ तीर्थकरोनी छे, ज्ञेने दोडा आजे दृष्टि, अणहेव अने सुलदा (रुक्मिणी) नामथी ओणेचे छे.

आ मंहिरमां अनंगलीभव (सं. ११८६ थी १२२३)ना सभयमां विभवाहेवी तथा लक्ष्मीहेवीना मंहिर, पुरुषोत्तमेव (सं. १४१५ थी १४७५)ना सभयमां लोगमंडप, तथा अतापुर (सं. १४७५ थी १५३२)ना सभयमां नवो जगमोहन अन्यो छे. आ मंहिरमां अनेक भूर्तिओ छे. नरसिंह, विभवाहेवी अने शीहेवी भूर्तिओ सुडाल अने सल्लव छे.

जगन्नाथ, भुवनेश्वर अने डोणार्केना मंहिरमां स्त्रीपुरुषोनी जोहेवी भूर्तिओ छे, वज्चे वज्चे हाथीनां माथा उपर सभवटवाला सिंहनी पशु भूर्तिओ जेसारी छे. उडिसानी आ एक विशेष कुणा भनाय छे. आनु असली कारण ओ ज ३ लिघ्नी राज्यांशु राज्यिहन सिंहु छे, अने भगवान श्रीभद्रवीरस्वामीनु लांगन पशु सिंहु छे.

आ मंहिरां धणी अंशीव भूर्तिओ छे, जे लाव पञ्चरमां भेडा आझारथी ओहेवी छे. अभाँ डोनी भुवनघटना अंकित छे तेनु डोर्छ तेने जान नथी. नीतिमान भक्तो तेने दोकी देवाना पक्षमां छे. डोर्छ डोर्छ तेने उमा-भद्रेश्वर ग्रीष्मिक देवाना संरक्षित भानी तेनी रक्षाना पक्षमां छे. संक्षेप छे के राष्ट्रकुपुर तीर्थमां दूरना एक वीज मंहिरनी दीवालमां आ. रथ्युलि-भद्रसुरिनी भुवनघटना अंकित छे, तेभा अहीं पशु डोर्नी भुवनघटना अंकित थर्छ छो. जैन, खोड तथा वैहिक पुराणानां अभ्यासी ज तेनो साचो भुवासो करी शडे.

(४) डोणार्क मंहिर : पुरीथी धर्शन भूखुमां २० भार्तीय फूट समुद्रकिनारे सूर्यमंहिर छे जे अश्रुमां घोड-पेगोडा तरीके प्रसिद्ध छे.

आ मंहिरनी जियार्थि २२७ फूट छे, कंपाउंड ८७५ फूट लाखुं, ५४० फूट घण्टाणु छे. गंगवंशना राज्य नरसिंह (सं. १२३८ थी १२६४) २६ वर्ष सुधी १२०० कारीगरो शेइ ४० क्षेत्राना भर्ने आ मंहिर बनायु छे, जे अस्यारे तूरीहरी हालतमां जेलुं छे. भारतमां १ काशमीरनु भार्तीड मंहिर अने २ डोणार्कनु मंहिर एम ऐ सूर्यमंहिरो छे.

[जुओ अनुसंधान पृष्ठ २२०]

હિન્દુપટ ચૌરાસી બોલ પ્રત્યક્ષિતઃ (૮૪ બોલવિચાર) રેખાદર્શન

લેખક : શ્રી. હૃતાત્મક ર. કાપડિયા એમ. એ.

મનોભેદભાંથી મનોભેદ—નૈન ધર્મના અતુયાયીઓના સુખ્ય એ વર્ગ ગણાય છે, શ્વેતાંબર અને હિંગાંબર, એ બનેનાં એવાં કેટલાંક મંત્રભ્રૂં છે કે જેમાં એકઘીલ લિન્ન મત ધરાવે છે. પ્રારંભમાં આવા મંત્રભ્રૂંની સંખ્યા બહુ આણી હોય, પરંતુ ધીરે ધીરે મત-બેદભાંથી મનોભેદ જેવી વૃત્તિએ જેર પડકયું હોય ત્યારે નાની નાની આપતોને પણ મહત્વની ગણ્યાવાનો વારો આવ્યો હોય. ગમે તેમ પણ ન્યાયવિશારદ ન્યાયાચાર્ય ઉપાધ્યાય યશોવિજય ગણ્યાના સમયમાં શ્વેતાંબરો અને હિંગાંબરો વચ્ચે ૮૪ આપતોભાં લિન્ન લિન્ન મત પ્રવર્તિત હતા. એનું હિન્દર્શન ઉપર્યુક્ત ન્યાયાચાર્યની એક કૃતિ કરાવે છે. એની આણી રેખા હું આ લેખમાં આદેશું છું.

નામ—ગ્રંથકારે સ્પષ્ટ શાખાભાઈઓ આ કૃતિમાં એનું નામ દર્શાવ્યું નથી શેથી કરીને હાથપોથીઓ તેમ જ એની પ્રકાશનો ઉપરથી આપણને આ કૃતિનાં નામ જાણુાય મળે છે. આ નામેમાં એકવાક્યાત્મક નથી એટલે મારે શીર્ષકમાં સૂચવાયા પ્રમાણેનું નામ યોજવ્યું પડક્યું છે. એમાં ‘હિન્દપટ’ અંશ કર્તાએ “હિંગાંબર” માટે કરેલા પ્રયોગને આભારી છે.

હાથપોથીઓ—નૈન ગૂજરાતી કવિઓ (લાગ. ૩, ખંડ ૨, પૃ. ૧૧૧૫)માં ચાર હાથપોથીઓને અગે નીચે મુજબ નોંધ છે:—

“(૧) ધર્તિ શ્રી હિંગાંબરેકા ચ્યતુરશાતિ વાક્યરચનાત્યાપક સ્વેતાંબર મતથાપક ઉપાધ્યાય શ્રી જશોવિજયગણિ વિરચિતાચાં ચ્યતુરશાતિ બોલરચના સમામ. સં. ૧૭૮૪નો એક ચોપડો જશ.

(૨) પત્ર દિન. ૩૦૪ અભય.

(૩) સં. ૧૭૬૪ શિં ૦ પ્રોતિવિલાસ શિં ૦ લીમવિજય શિં ૦ પુન્યવિજય લિ. પત્ર ૬ પો. ૧૨, દાન.

(૪) ધર્તિ શ્રીમન્નૈતમતૌદોતદ્દ્દ્રુપદ કૃપૃષ્ઠવિનાશનૈકવાદપ્રત્યુત્તરયંદ્રિકા સમામા સં. ૧૭૬૮ માધ વદી ૬ શુક્લ દિન ૦ અંલાતિ અંદ્રેણ. પત્ર ૭ નં. ૨૧૮ સને ૧૮૭૧-૭૨ ભાં. છ.

પ્રકાશન—છંદોનાં નામ સહિત પ્રસ્તુત કૃતિ પ્રકારણું રેનાકરે લા. ૧, પૃ. ૭૬૬-૭૭૫)માં છી. સ. ૧૮૭૬માં પ્રકારણિત કરાઈ છે.

ગૂજરાતસાહિત્યસંબંધનો અથવા વિલાગ છી. સ. ૧૬૩૬માં છપાવાયો છે. એમાં લગભગ અંતમાં પૃ. ૪૭૨-૪૮૭માં આ કૃતિ થોડાંક દ્રિપદ્ય, છંદોનાં નામ અને વિષેનાં શીર્ષક સહિત છપાવાઈ છે. આમ આ કૃતિ એ સ્થળેથી અકાશિત થઈ છે. તેમાં પ્રકારણું રેનાકરે લા. ૧, પૃ. ૭૬૬માં એનું નામ પ્રારંભમાં નીચે મુજબ અપાયું છે—

“અથ શ્રી દિવષટ ચોરાશી બોલ પ્રારંભ”

૧. કૌસંગત શીર્ષક યશોવિજય ગણ્યાના નેમયમેરના કાગળને આધારે શ્રી હિંગાંબરું છે.

२३४]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : ११

गृ. सा. सं. ना. प्रथम विभाग (पू. ५७२) मां “श्री हिंपट चोराशी भोव” ऐवं नाम नजरे पडे छे, ज्यारे पू. ५७७नी पुणिकामां “श्री हिंपट चोराशी भोव प्रत्यक्षितः” ए प्रभाषे नाम निर्देशायुँ छे. अहीं के “प्रत्यक्षित” शब्द छे ते भाडत्वनो होवाथी भे नामकरणमां एने स्थान आधेयुँ छे.

लाखा—प्रस्तुत कृतिनी लाखा ‘हिंदी’ छे. तेम छतां आ दृति जाणे गुજरातीभां न होय तेम एने रेगृ. सा. सं. ना. तेमज भीजन पछु डेटलांक प्रकाशनोभां गुजराती दृति तरीके स्थान आधायुँ छे.

पद्यसंघ्या—आ दृतिमां गृ. सा. सं. प्रभाषे २६२ पढो छे, ज्यारे डोर्धक छाथ-पोथीभां तेरमुँ पद्य नहि होवानो उल्लेख छे एटले ए छाथपोथीभां २६० पढो होरे.

छंह—आ दृति ज्ञातनाना छंहामां रचयेली छे. एनां नाम एने एने लगतां पढोना अंक तेमज ते ते पचनी कुल संघ्या हुँ नीचे मुजम्ह दर्शायुँ छुँ—

अप्रदल (अरिल्ल) ५५, ७७-७८. [४]

चोपार्छ २४-३२, ६३-१०१. [१८]

छोप्य १, १६: [२]

होखरो ३-११, १३-१७, २०-२३, ३४-३६, ४६-५४, ५६-६६, ७२-७५, ८०-८७, १०३-१४१, १४४-१५१, १५३-१६१. [११५]

स्वैयो २, १२, १८, ३३, ४५, ७०, ७१, ७६, १४२, १५२. [१०]

स्नोरी होखरो ८८-८८, १०२, १४३. [४]

स्नोरहो ४०, ६०-६२. [४]

हुरिगीत (गीता) ४२-४४. [४]

हुलबध—प्रस्तुत दृतिनो लिहाज पाडिए श्वेतांबर भतनी सभीकार्ये करेली प्रवर्षणाने आभारी छे एम १५८मुँ पद्य जेतां ज्ञायाय छे. ए हिंगांबर पांडिते श्वेतांबरोथी हिंगांबरो ८४ बाल्लतां जुहा पडे छे एम ज्ञेशरोथी प्रतिपादन क्युँ छे. आ ज्ञातनी एमनी दृति उपर्युक्ती एना प्रत्युतर इपे श्वेतांबरोने उद्देशीने प्रस्तुत दृति योजाई छे. ए लेभराज पाडे ते डाणु ए विषे थाकुँ क कीश. एमने विषे उहिन्दी जैन साहित्य का संक्षिप्त इतिहास (पू. १३१ अने १७०-१७१)मां नीचे मुजम्हनी हकीकत आपार्छ छे. एमनो समय आशरे वि. सं. १६७थी लगभग वि. सं. १७२५ सुन्नीनो छे. एमनी पत्तीतुँ नाम उपगीता हुँ. एम्हे एक कन्धाने जन्म आधो. होतो. एनुँ नाम जैनी रभायुँ हुँ. एने एना पिता लेभराजे अणावी गणावी विदुली अनावी हती. एना लम्ह नंदलाल साथे करायां हतां. ए

२. यशोविजय गणीनी डेटलीक हिंही दृतियो पछु अहीं आपार्छ ते आ संग्रहनां नाम जेतां समुचित न गण्याय.

३. आना लेखक श्री. कामताप्रसाद जैन छे एने आ पुस्तक “भास्तीय ज्ञानपीठ” काशीथी छ. स. १५४७मां प्रसिद्ध थयुँ छे. एमां ‘न्यायाचार्य’ यशोविजय गणी, विनयविजय गणी अने अङ्गांब-कवि आनंदवन विषे डेटलीक बालत रजू कराई छे.

અંક : ૧૧]

દ્વિપટ ચૌરાશી બોલ પ્રત્યુક્તિ.....

[૨૫૫

નંદલાલના પિતાનું નામ ખુલાભીદાસ હતું અને પિતામહનું નામ અવણુદાસ હતું. અને એ બને આગામાં રહીશ હતા.

હેમરાજ પાઉના શુરૂનું નામ દ્વિપટં હતું. એ હેમરાજ પાઉએ નિભન વિભિત્ત કૃતિઓ રચી છે :—

ગોમભટસાસની વચનિકા }
નયચુક્કાની વચનિકા } વિ. સં. ૧૭૨૪

પંચિથેકાયની હિન્દી રીકા વિ. સં. ૧૭૦૬

પવયણુસાર ” ”

લાપાલક્તામર

સિતપટ ચ્યાર્યાસી બોલ

આ પૈકી લાપાલક્તામર પ્રકાશિત થયું છે. એ લક્તામરસ્તોત્રના હિન્દી ભાષામાં અનુવાદે રચાયેલી કૃતિના અંતમાં નીચે મુજબનું પદ છે :—

“ ભાપામહક્કામર કિયો હેમરાજ હિત હેત ।

જે નર પઢે સુભાવસું તે પાવૈ શિવખેત ॥”

સિતપટ ચ્યાર્યાસી બોલ નામની કૃતિ ડાઈ સ્થળેથી પ્રસિદ્ધ કરાઈ હોય એમ જણાતું નથી. શ્રી. અનન્દનસાગર ગણેશે દ્વિપટ ચ્યાર્યાસી બોલની હૃથપોથીએ સુરતમાં કચાં કચાં છે તેની ભારી વિસ્તિ અનુસાર તપાસ કરતાં તેમને આ નામવાળા એક હૃથપોથી ભળા છે, પણ એ તો હેમરાજ પાઉની પ્રસ્તુત કૃતિ હોય એમ તેઓ જણાવે છે. એમણે એના પ્રારંભના ચાર પદો અને અંતના છ પદો મને નીચે મુજબ લખી જણાયાં છે :—

અગ્ર ભાગ

“ સુનયપોષ હતદોષ મોષ સુષ તિવપદદાયક,
ગુણમણિકોષ સુઘોષ રોષહર તોષવિધાયક,
એક અનંત સર્વુપ સતવંદિત અમિનંદિત,
નિજનિજ સુભાવ પરમવે ભાસૈ અમંદિત,
અવિદિતચરિત્રવિલાસિત,
અમિત સર્વમિલિત અવિલિસ તન,
અવિચલિતકલિકનિજરસલલિતજયજિનવિદલિતકલિલઘન ॥ ૧ ॥

સચૈયા ઇકતીસા

નાથ હિમભૂધર તૈનિકસિ ગણેસચિત્ર ભૂપરિવિથારિ સિવમારગ લૈંધાઇ હૈ ।
પરમતવાદ કૂલ ઉન્મૂલિ અનુકૂલ મારગ સુભા ઓદરિ આઇ હૈ ।

૪. આ કૃતિ મૂળ લખાલક્તામરસ્તોત્ર તેમજ એના અનુવાદ રેપે (વિજયસિંહસુનિના શિષ્ય) હેવિજલે
વિ. સં. ૧૭૩૦માં હિન્દીમાં પદમાં રચેલી કૃતિ સહિત “શ્રીલક્તામરસ્તોત્ર” એ નામથી નિર્ણયાં
સાથર મુદ્રણાલયમાં દ. સ. ૧૮૭૭માં છપાયી પ્રસિદ્ધ કરાઈ છે. પ્રકાશકનું નામ અપાયેલું નથી.

२३६]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[कर्त्ता : २१

बुध हंस सेह पाय मलकौं विधंस करै सरवंस सुमति विक्रसि वरदाह है।
सपत अभंग भंग उठै है तरंग जामै औसी वानी गंग सरवंग अंग गाह है ॥ २ ॥

दहरा

सेतंबर मतकी सुनी जिनतै हेमरयाद।
मलिंहि दिगंबर स्त्यौ नहीं जै चौरासीवाद ॥ ३ ॥
तीनकी कछु संक्षेपता, कहिए आगम जानि,
पढत सुनत जिनकै मिटै, संसय मत पहिचानि ॥ ४ ॥ ”

अन्त भाग

चौपह

“ होहि युगलि घास बळधारी कहै सिलाकपुरुष निहारी,
चौसठि इन्द्र न अधि जामै बाहू देवलोक कही माने ॥ ८५ ॥
जे यादव जिनमारग परखी तिनकौ कहै मांसकौ भखी,
मनुज मानुषोत्तर ते आगै, जाहै कहै तउखतलागै ॥ ८६ ॥
२६ कहै नाही २ कामचउवीस, अस्तु नवोत्तरै लघु समुद्रमां न तनाही,
औरापति भरत भजि खित अक सौ साठिमाहि
चौरासी लख जोनि है, अे चोरासी बोल जे मानि है ते मानि है
ते मानि है भवसागरकछोल ॥ ८७ ॥ दो० ॥

नगर आगरौ मै कोरपाल सग्यान, तस निमित्त कवि हेमनै, किए कवित्त परवान ॥ ८८ ॥
दोषभावधरि नहि कोयौ कियो न निजमतपोष,
सत्यारथ उपदेश यह करे सुजनसंतोष ॥ ८९ ॥
सत्यारथ वानी प्रगट, घटघट करो उ(द)धोत,
संसयतिमिरपटल फटो वढ़ीयांन सुख होत ॥ ९० ॥
इति चौरासीबोल समाप्तः शुभं भवतुः कल्याणमस्तुः ॥ श्रीः ॥ ”

रचना—सभ्य धृत्याहि—“ द्विष्ट ८० ऐआ प्रत्युक्ति ” नामनी प्रस्तुत छुति क्यारे
क्यां धेऊन्धि ते विषे ए छुतिमां उत्सेख नथी एम एनी भुद्रित आवृत्तिए। ज्ञेनां ज्ञाय
छे। आ छुतिनी नेंध यशोविक्ष गणिये एमना। एक कागणमां लीधी छे ए भाषत तेमै
तेओ। वि. सं. १७४५ना अरसामां स्वर्गे संचर्या ए भाषत विचारतां आ छुति लगभग
२७५ वर्ष नेट्वी तो प्राचीन गण्याथ।

प्रतिभारतकनी स्वेपरापृ वृत्ति सहितनी ए आवृत्ति “ भुक्ति-कमल-नैन-गोहन-

प. आ स्वेपक्ष वृत्तिनी वि. सं. १७१३मां लभायेली एक हाथपोथी पायथना कंडारमां छे।

અંક : ૧૧]

હિન્દુપટ ચૌરાશી એવા પ્રત્યુક્તિના.....

[૨૩૭]

માદા "માં વીર નિ. સંવત ૨૪૪૬માં પ્રસ્તુત થઈ છે તેમાં " કિંચિત્ પ્રાસ્તાવિક " (પત્ર ૧૦)માં પ્રસ્તુત કૃતિક કાશીથી આવતાં રચેલ, એવો ઉલ્લેખ મુનિ (હવે સુરિ) પ્રતાપવિજયણુંએ કર્યો છે. એ માટે એમણે કોઈ આધાર અહીં આપેનો જણાતો નથી. વિશેષમાં એમણે આ કૃતિ " ગુરૂર ભાગ અન્નાવલિ: "માં નોંધી છે અને ડેટડીક પત્રિકાએના લેખકોએ પણ તેમ ક્ષુદ્ર છે તે ઉચ્ચિત નથી. એથી તો યશોવિજય ગણીને જિંદિની કૃતિઓના રચનાર તરીકે જે માન મળું જોઈએ તેમાં વિક્ષેપ જોભા થવા સંભવ છે.

વિષય—પ્રસ્તુત કૃતિનો આરંભ વર્ધમાન નામના જિનેશ્વરની હૃદયંગમ સ્તુતિ દ્વારા કરાયો છે. આ વર્ધમાન તે મહાવીરસ્વામી એમ સહજ લાસે, પણ આ સ્તુતિની રચના એવી છે કે એ અધૂષસ, વ્યાન્દ્રાનન, વારિષેષુ અને વર્ધમાન એમ જે જિનેશ્વરનાં ચાર શાખાન નામ ગણ્યાય છે, તેમાંના હરકાઈ વર્ધમાન જિનેશ્વરને અગે ઘરી શકે છે. આ સ્તુતિ આદ શ્વેતાંબરોના શ્રીશાલી ભૂરિ ભૂરિ પ્રશાંસા કરાઈ છે. અને ત્યાર પછી " હિંગંબર " મત કરારે, ક્રાનાથી અને ક્રેમ ઉત્પન્ન થયો એ હંગીકત અપાઈ છે. ત્યાર આદ કૃતિના મધ્યમિન્દુ-ઇપ હિંગંબર અને શ્વેતાંબર મતમેનું વિસ્તૃત નિદ્રપણ દ્વારાખા-હીલ પૂર્વક કરાયું છે. અંતમાં હેમરાજ પાડે તરફથી કરાયેલી પ્રદેશાના પ્રત્યુત્તર ઇષે આ કૃતિ યોજાઈ છે, એવો ઉલ્લેખ કરાયો છે.

હિંગંબરો અને શ્વેતાંબરો વચ્ચે કઈ કઈ ૮૪ બાયતમાં એકવાક્યતા નથી એ આ કૃતિમાં દર્શાવાયું હોય એમ આપણે એના નામ તેમજ લો. ત અને ૧૫૮ જેતાં જણાય છે, પરંતુ એક પ્રકાશમાં એ વધાં જુદ્દા તારવેલાં નથી. ગૂ. સા. સં. (લા. ૧)માં જે શીર્ષક અપાયાં છે તે લગભગ સાડ બાયતો રજૂ કરે છે. આથી જોડા જોતરને ૮૪ એવા હોય તો તે તારવાના પ્રયાસ થયો ધર્યો. એ માટે સમયાદિની અતુદૂળતા નહિ. હોવાથી હું અત્યારે તો મને જેવું સ્ફૂરે છે એવું હિંદુસંસ્કારે થોડું કહું છું:—

(૧) હેવાધિહેવમા—તીર્થીકરમાં ૧૮ હેણો હોના નથી એમ તો શ્વેતાંબરો અને હિંગંબરો.—અને પદ્ધ માને છે, પરંતુ અનેની ગણુતીમાં મહત્વનો દેર છે.

(૨) ડેવલીને ડેવલાહાર હોય છે. (એયો ભોજન કરે છે.) (૨વે.)^૯

૯. આ વાત યાસાર હોય તો પ્રસ્તુત કૃતિ ' વાયક ' પદ મળ્યા પહેલાંની એઠયે ડ. વિ. નિ. સં. ૧૭૧૯ કરતાં પહેલાંની ગણ્યાય.

૧. " ભારતીય જ્ઞાનપીઠ કાશી " તરફથી ચાહું વર્ષમાં (ઈ. સ. ૧૯૫૬માં) નેમિયન્ડ શાસ્ત્રીએ રચેલ હિન્દી-અનૈ-સાહિત્ય-પત્રિરીકન પ્રસિક થયું છે. એમાં " જસવિલાસ સંચાહ "માંના પોતાનું મુખ્યાંકન કર્યાયું છે. અહીં પૂ. ટખમાં કહ્યું છે કે " યારોવિજયજીકે પદોંકી ભાષા બડી હી સરસ હૈ । આદમનિષા ઔર વૈયક્તિક ભાવના મી ઇનકે પરોમે વિદ્યામાન હૈ । "

૧. હાલમાં મને " હિંગંબર (હિન્દુપટ) ૮૪ એવા "ની એક હુથપોથી મળી આવી છે. એમાં " હિંગંબર ન માને " એના ઉલ્લેખ પૂર્વક ૮૮ (એ બાયત કારી જગ્યા રજાઈ છે.) બાયતો જાળું વાઈ છે. એમાં શ્વેતાંબરોને પણ અપવાદપ્રે ભાષ્ય હોય એવી પણ કોઈ કોઈ બાયત જગ્યા રજાઈ છે. આ હુથપોથી લગભગ સી વર્ષ જેટારી પ્રાચીન લાગે છે. એના અંતમાં નીચે સુજામ ઉલ્લેખ છે:—

" ઇતિ શ્રી ચોરાણિ ૮૪ બોલ દિંગબર ન માને સો સંપૂર્ણ । લિ । પં । હરીરવિજય શ્રીનિમચર્ણી આવણી નયરિ ॥ ૧ ॥ "

૧૦. "૨વે." થી એમ સુચનાય છે કે આ શ્વેતાંબરોની માન્યતા છે.

२३८]

श्री. जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २१

- (३) तीर्थंकरनुं शरीर परम औहारिक होय छे. ए शरीर सात धातुओथी वर्जित होय छे. (दि.)^{१०}
- (४) जिनना शरीरनी स्थिति नेकर्माहारे छे. (दि.)
- (५) डेवलीनां कर्म अजेवी होरडी (२८७४) जेवा छे. (दि.)
- (६) जिनने ११ परिषष्ठ होय छे. (श्वे.)
- (७) डेवलसान ए जिननुं क्षायिक सुभ छे. (दि.)
- (८) हेवनी प्रेरणाथी तीर्थंकर ऐसे अने बडे. (दि.)
- (९) डेवलसान भगतां ए (जिन) आकाशमां आकडाना इनी घेडे अमे छे. (दि.)
- (१०) जिन (तीर्थंकर) आकाता नथी. अमना भस्तुमांथी नाह नीडें छे. (दि.)
- (११) शबाका-पुरुषोने कही निहार होतो नथी. (दि.)
- (१२) अप्रभाता साधुने आहार-विहार होता नथी. (दि.)
- (१३) भानुषोतर पर्वती अहार साधु जय तो अमनुं प्रत आंगे. (दि.)
- (१४) भरत चक्रवर्तीने गुहस्थपणामां डेवलसान थयुं हतुं. (श्वे.)
- (१५) भाव सुभ्य नथी; द्रव्य सुभ्य छे. (दि.)
- (१६) अधिगम विना सम्यक्त्व होय. (दि.)
- (१७) द्रव्य विना यारिन नहि. (दि.)
- (१८) यारिन विना सम्यक्त्वथी मोक्ष भगे. (दि.)
- (१९) डेवलीना भस्तुक उपर डेहि वस्त्र भुडे तो डेवलसान धरी जय. (दि.)
- (२०) भाव-लिंगने प्रभाणुङ्ग गणहुयेतो सिक्कना पंहर लेह धटे-व्याजणी टरे. (श्वे.)
- (२१) खी-लिंगे सिद्ध थवाय. (श्वे.)
- (२२) भद्रिं तीर्थंकर खी छां, नहि के पुरुष. (श्वे.) तीर्थंकरने प्रणाम अने अहसिण्या खाडुअलिये (१) कर्यां. (श्वे.)
- (२३) तीर्थंकर वार्षिक हान हे छे. (श्वे.)
- (२४) परहित करवाथी पुष्य भगे छे. (श्वे.)
- (२५) कृपिल (डेवलीये) चृत्य कर्युं हतुं. (श्वे.)
- (२६) भद्रिं अने नेभि ए ए ज तीर्थंकर अपरिणीत रखां छां. (श्वे.)
- (२७) द्रौपदीने खांच भति न हता. (दि.)
- आ प्रमाणे थीज भोज पण रजू थर्झ शें, पण ए कार्य अत्यारे थर्झ शें तेम नहि होवाथी हुं थू. सा. सा. (भा. १)मां प्रस्तुत दूतिने अंगे के ओलस्त्रक शीर्ष का अपायां छे ते हुं लगलग तेवां ने तेवां रजू करुं छुं.
- १ अहार होषनी अन्य रीते भान्यता, २ डेवली लुक्ति, ३ तीर्थंकरनुं शरीर सोन धातु सहित छे, ४ डेवलीने अग्नियार परिषष्ठ छे, ५ डेवली-आहार-सिद्धि, ६ डेवलीनी वाणीनी साक्षरता, ७ 'भानुषोतर' पर्वती अहार भतुष्यगति, ८ भरतने गुहस्थपणामां डेवलसान. ९ व्यवहारनयनी आवश्यकता, १० अन्य लिंगी वेष सिद्धि, ११ खीलिंग-सिद्धि, १२ खाडुअलि डेवलीनो विनय, १३ तीर्थंकरनुं वार्षिक हान, १४ कृपिल डेवलीनुं चृत्य, १५ भद्रि अने १०. 'हि.' थी अम सुचनाय छे के आ हिंगभरोनी सान्यता छे.

અંક : ૧૧]

હિન્દુપટ ચૌરશી બોલ પ્રસ્તુતિ.....

[૨૩૬

નેમિનિન કુંવારા, ૧૬ સાહુતું લિક્ષાઅહણ, ૧૭ કરતૂરી આહિથી પૂજન, ૧૮ જિન પ્રતિમાની અંગપૂજન, ૧૯ સમવસરણમાં જિનની નમેતાતું અદર્શન, ૨૦ ગૌતમરસવામીએ પરિવાજકનો ક્રેલો સાતકાર, ૨૧ જિન-પ્રતિમાનું પ્રકાલન, ૨૨ શુરુની સ્થાપના, ૨૩ 'શત્રુંજ્ય' તીર્થ છે, ૨૪ શુદ્ધોપયોગમાં સાહુ ઉપહેઠ તથા દીક્ષા આપે, ૨૫ વસુદેવની ભાગેર હળાર (૭૨૦૦૦) ચેલી, ૨૬ મહાવીરસવામીનો જમાલિ નામે જમાઈ, ૨૭ ચ'ડુદ્રારાયાર્ણના શિષ્યને ડેવલસાન, ૨૮ વ્યવહારની સ્થાપના, ૨૯ હિંગંબરોની રીત, ૩૦ દ્વયાર્થિક અને પર્યાર્થિક નથી એ અને સુખ છે, ૩૧ પર્યાય ગુણ છે. ગુણાર્થિક નથી જુદે નથી. ૩૨ નથી સાત છે, નવ નહિ. ૩૩ સમયપર્યાયની કાલ દ્રજ્યતા, ૩૪ પ્રભુ વીર 'મેરુ' ચણાયે, ૩૫ મુનિસુત્તસવામીના 'ગણુધર' અથ્ય, ૩૬ અડસઠ અક્ષરોનો નવકાર મંત્ર, ૩૭ તીર્થીકરની દેશના અર્થ-માગધીમાં, ૩૮ સ્વર્ગમાં તીર્થીકરની દાઢાની પૂજન, ૩૯ નીચ કુળમાં ઉત્પન થયેલાની પણ સિદ્ધિ, ૪૦ વીર પ્રભુનો ગલ્ભાપદાર, ૪૧ વીર પ્રભુના એ પિતા, ૪૨ ત્રિશલાનું અસતીત નથી, ૪૩ બાહુઅલિએ ડેવલી થયે તીર્થીકરની પ્રદક્ષિણા કરી, ૪૪ વીર છીંક આધી, ૪૫ 'હરિવર્ણ' ક્ષેત્રાહિમાં યુગલિકનું આનયન ૪૬ 'સૌધર્મ' દેવલોકમાં ચ્યમોચાત, ૪૭ વીરનો અનાર્થ દેશમાં વિહાર, ૪૮ દેવ મનુષ્ય વર્ચ્યે લોગ, ૪૯ વીરનું પ્રથમ વ્યાખ્યાન વિલ્લેલ થયું, ૫૦ તીર્થીકરની માતાને ચૌંડ સ્વેન, ૫૧ અત્રીશ અતિશય જુદાં કરવાં યોગ્ય નથી, ૫૪ ચર્મ જલપાને દોષ નથી, ૫૫ પાદું ધી કલ્પે, ૫૬ મરુદેવી અને નાલિ બને જુગલિયાં, ૫૭ તેમનાથી જ્ઞાષલ જિનનો જરૂમ, ૫૮ સાહુ પાત્રધારી અને ઓમના ઉપકરણોની સ્થાપના, ૫૯ જિનાગમે વિવભાન છે.

અંશો અને અંથકારો વિષે ઉલ્લેખ^૧—પ્રસ્તુત કૃતિમાં નીચે સુખ બાર અંશોના નામ અપાયાં છે:—

આવસ્યક (૪), જ્ઞામટસાર (૧૦૩), જ્ઞાતાસ્ત્ર (૧૪૨), તત્ત્વાર્થ (તત્ત્વાર્થ), (૨૫, ૮૩, ૯૨), તત્ત્વસમાધિ (૧૧૧), નથયંક (૮૩), પ્રેવચનસાર (૨૬, ૪૪, ૬૦, ૭૭), વ્યવહાર-ભાષ્ય (૭૪), શત્રુંજ્ય માહાતમ (શત્રુંજ્ય-માધાત્મય) (૧૦૦) સમયસાર (૪૨), સંભતિ (૭૬, ૮૨), અને સ્નગડાંગ (સ્નગડાંગ) (૧૧૪).

અંથકારનાં નામ નીચે સુખ છે:—

હેવસેન (૮૩), સિદ્ધસેન (હિવાકર) (૭૬) અને હેમરાજ પાંડે.

આ ઉપરાંત પૂ. ૬૨માં તત્ત્વાર્થના વૃત્તિકારનો ઉલ્લેખ છે. એ વૃત્તિકાર સિદ્ધસેન-ગણી હોય એમ લાગે છે.

અવતરણ—પ્રસ્તુત કૃતિમાથી અન્યત્ર અવતરણ અપાયાં છે. જેમણે કર્તાએ લખેલ ૧૨કુણળા (પૃ. ૬૦)માં નિમનલિનિત પદ્ય અવતરણદ્વારે આયુષુ છે, તેમ કરતી વેળા પ્રસ્તુત કૃતિનો ઓમણું “૮૪ બોધવિચાર” એ નામથી ઉલ્લેખ કર્યો છે:—

૧૧. અન્ય વિશેષ નામ તરીકે આર્થિકાણું અને ઓમના એક વખતના શિષ્ય સ્વાહાર્યમલદનો ઉલ્લેખ પાંચમાં પદ્યમાં જોવાય છે.

૧૨. આ કાગળ ગુ. સા.૦ સા.૦ (ભા. ૨) માં પૃ. ૮૫-૧૧૨માં છપાવાયો છે. એ માટે કર્તાના હૃસ્તાક્ષરણાણી હાથપોથીનો ઉપયોગ કરાયા છે.

[२४०]

श्री जैन सत्य प्रकाश

[वर्ष : २१

“सूत्रनमइ परिसह कहे वृत्ति लेड नकार ।
जो संसो उषजत नहीं तो तुझ भ्रमको भार ॥”

आ पद्म कंडक देवदास साथे गू. सा. सं. (ला. १) आं पद्म तरीड जेवाय छे. अवी
रीते जैनधर्मवरस्तोत्र (शेष २८, ३० अने ३१) नी रेवपत्र वृत्तिमा पृ. १३६१, ६५
अने ११० माँना अवतरण १८, १ अने ४५मा पद्मउगे थोडाक देवदास साथे नजरे पडे छे.

महत्वः—प्रस्तुत इति विविध दृष्टिये महत्वनी छ. नेमके,

(१) आ इति ओछामां ओछां २६७ वर्ष जेट्टी तो ग्राचीन छे ७, अट्टले अे समयनी
हिंदी लापाना अभ्यास माटे अे डाममां लाई शकाय तेम छे.

(२) दगडग नष्टसो वर्ष उपर जैन समाज डेवा डेवा भतभेहामां रस धरावतो होतो
तेनुं अे समयनी सामाजिक भनोदशातुं प्रस्तुत इति हिंदूर्णन करावे तेम छे.

(३) सौथी महत्वनी वात तो अे छे के श्वेतांबरो अने हिंदूं अर्थात् वर्च्येना १४भतभेहानो
शूंभवायाह इतिहास तैयार करवामां आ इति उपयोगी थर्ड पडे तेम छे. जे आवो इति-
हास निष्पक्षपातपणे रथाय अने अमां प्रत्येक भतभेह इचारे डेम उत्पन्न थयो अने केवी
रीत अे पेषाचो अथवा तो ओछेवते अंशे जतो करयो तेनुं वास्तविक निःपत्तु कराय तो
ज्ञानोना ए भुप्य हिंदूको वर्च्येनुं वैमनस्य सहेजे ओछुं थाय अने अे कंडक नानेस्तो
दाख न गणाय.

आम प्रस्तुत इतिनुं अनेकविध महत्व लेवाथी तेमज अवतरणमां कवचित् देवदास
ज्ञाय छ तेथी ओनो विशेष भ्रयार अने अभ्यास थवो धटे. अे माटे आ इतिनुं सभीकाश-
लम्ब कंसुकरण तैयार करावी प्रकाशित करावुं जेठ्ये. अमां पूर्वपक्ष तरीड हेमराज पाउनी
सितपट चार्यांसी घोल नामनी इतिने रथान अपावुं धरे. १५ विशेषमां प्रस्तुत इतिनो
शुजराती अनुवाद पछ अपावो नेई अ. साथे साथे सामसामी अपाचेली हलीलो. डेट्टी सम्प
अने ग्राचीन छे ते दर्शावावुं जेठ्ये. न्यायाचार्यनी दृष्टियोना ग्राचारर्थे प्रथास करनारी
उभोष्टजी निमाचेली समिति आ भावत पूर्वुं लक्ष्य आपरो, तो भारा जेवाना आनंदमां
वृद्धि थरो.

१३. आ पृष्ठांक हे. ला. नै. पु. संस्था तरक्ष्य प्रकाशित अने भारे हाथ संपादित आवृत्ति अनुसार छे.

१४. “उत्तम अने भव्यम त्यागमार्गना अे ग्राचीन समन्वयमां ज वर्तमान हिंदूं अर्थात् श्वेतांबरोना
महत्व भूण छ,” अम. प. सुभकालज्ये तत्त्वार्थसूत्र (शुजराती व्याख्या सहित) ना परिचय (प.
३०, द्वितीय आवृत्ति) मां कहु छे. विशेषमां अमणे अहों (प. ३०-४२ मां) अचेलत्व अने सचेलत्व
तेम ७ श्रुतना स्वीकार-अस्तीकार विषेना डेलाक भुक्ति रजू कर्या छे.

१५. थोडा वापत उपर अने हिंदूभूमताखंडन नामनी इति हाथपोथी जेवा मणी हुती
अमां सत्र भावतो विषे बहापोह करयो छे. नेमके परिधापनिका, जिनभूर्ति, असि, कस्तुरिका,
घागपट्टक, औ-निर्वाणु धत्याहि.

નવી મહા

શ. ૫૦) શ્રી જોડીજ મહારાજ જૈન દેરાસર, પાયણી, સુંધર્-૩

સમિતિના ચારે પૂ. મુનિસભ્યોનાં સરનામાં

- (૧) પ. પૂ. આ. ભ. શ્રીવિજ્યલગ્નિષ્ટ્રિલ મહારાજ
ડે. તપગંથ અમર જૈનશાળા, આરવાડો, ખંભાત.
- (૨) પ. પૂ. આ. ભ. શ્રીવિજ્યલાવિજ્યસ્ત્રિલ મહારાજ
ડે. તપગંથ જૈન દેરાસર, એંડુઝરોડ, શાન્તાકૃત, સુંધર્-૨૩.
- (૩) પ. પૂ. આ. ભ. શ્રીચંદ્રસાગરસ્ત્રિલ મહારાજ
ડે. તપગંથ જૈન ઉપાશ્રી, લો, ડેનીગ સ્ટ્રીટ, કલકત્તા.
- (૪) પ. પૂ. સુનિ શ્રીદર્શનવિજ્યલ મહારાજ (નિપુણ)
ડે. જૈન ધર્મશાલા, સદર અન્નર, મેરઠસાહર (યુ. પી.)

પુસ્તક—રચીકાર

પુસ્તકનું નામ : શ્રી જિનગુજાપદ્રતિ

લેખક : પ. શ્રી. કલ્યાણવિજ્યલ ગણિ

પ્રકાશક તથા
માસિકાનાન : શ્રી. ક. વિ. શાખસંગે સમિતિ-જાદોર (આરવાડ)

મૂલ્ય : સંદુપ્યોગ

પુસ્તક : શ્રી. મહેન્દ્ર જૈન પંચાંગ

કર્તા : પ. શ્રી. વિકાસવિજ્યલ

પ્રકાશક : અભૂતલાલ ડેવગાસ મહેતા, નાગણ્ય ભૂફરની પોણ, અમદાવાદ.

કિંમત : બાર આના

પૂજય મુનિરાજેને

પૂજય આચાર્યાદિ મુનિવરો પેતાનાં સરનામાં કાર્યાલયમાં
લખી માટે એવી વિનાંતિ કરીએ છીએ.

૮૫૭૦

Shri Jaina Satya Prakasha, Regd. No. B. 3801 श्री जैन सत्य प्रकाश

श्री जैन सत्य प्रकाश

अंगे सूचना

प्रोजेक्ट

१. श्री. नैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति द्वारा 'श्री. जैन सत्य प्रकाश' मासिक १६ वर्ष थाया प्रगट करवामां आवेद्य.

२. एस समितिना आज्ञवत संरक्षक तरीके द्वा. ५००० आ० दाता तरीके द्वा. २००० आ० सहस्र तरीके द्वा. १०१० राखवामां आवेद्य छे. आ रीते महाव आपनारने कायमने भाटे मासिक मोक्षवामां आवेद्य.

विनांति

१. पूज्य आचार्यादि मुनिवदे अतुर्भौतिक स्थण नक्षी थातां अने शेष काणमां ज्ञानां निदरता होय एस स्थणानु सरनामुं मासिक प्रगट थाय अना १५ हिवस अगाडि मोक्षलता रहे अने ते ते स्थणे आ मासिकना प्रयार भाटे आहो अनाववानो उपहेश आपता रहे अनी विनांति छे.

२. ते ते स्थणोमांथी भणी आवतां प्राचीन अवशेषो उ ऐतिहासिक मालितीनी सूचना आपवा विनांति छे.

३. नैनधर्म उपर आक्षेपात्मक लेखा अहिनी सामधी अने मालिती आपता रहे अनी विनांति छे.

आहोकाने सूचना

१. "श्री जैन सत्य प्रकाश" मासिक प्रत्येक पवनी नीतिने अनुसरीने सुधारेवधारेश करवानो अंगेश महिना १५भी तारीखे प्रगट थाय छे.

मुद्रक : गोविंदलाल जगद्गुलाम शाह, श्री शारदा मुद्रणालय, पानडार्ह नाडा, अमरावाड.

प्रकाशक : चीमनलाल जोडगास शाह.

श्री. नैनधर्म सत्य प्रकाशक समिति कार्यालय, लेशंगलाईनी वांडी, धीकोटा रोड-अमरावाड.

२. आ मासिकनुं वार्षिक लवाज्जम दा. ३ नवं इपिया राखवामां आव्युं छे.

३. मासिक वी. पी. थी न मंगावतां लवाज्जमना दा. ४ मनीम्होर्डरहारा मोक्षी आपवा अनुदूगता रहेश.

४. आ मासिकनुं नवं वर्ष द्विवारीथी शह थाय छे. परंतु आहो गमे ते अंकुषी अनी शाकाय.

५. आहोकाने अंक मोक्षवानी पूरी साव-चेती राखवा अतां अंक न मगे तो स्थानिक पोस्ट ऑफिसमां तपास कर्या पछी अमने सूचना आपवी.

६. सरनामुं अद्वाववानी सूचना आठामां ओष्ठा १० हिवस अगाडि आपवी जडी छे.

लेखकाने सूचना

१. लेखा कागजनी एक तरड वांडी शकाय तेवी रीते शाहीथी लभी मोक्षलता.

२. लेखा ट्रूंडा, मुद्रासर अने व्यक्तिगत टीकात्मक न लावा ज्ञेष्य अ.

३. लेखा प्रगट करवा न करवा अने तेमां पवनी नीतिने अनुसरीने सुधारेवधारेश करवानो हड तंत्री आवीन छे.